www.thearyasamaj.org

Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

3rd January 2017

आर्य जीवन

2, 3, 4 फरवरी 2017
गुरु, शुक्र, शनिवार

स्थान :
वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल
उमानगर, कुंदनबाग,
बेगमपेट, हैदराबाद

www.thearyasamaj.org

సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ ఆధ్వర్యమున

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సౌజన్యంతో

హైదరాబాద్ నగరంలో

విద్వాంసుల జాతీయ ఆర్య మహా సమ్మేళనం

తేది 2 నుండి 4 ఫిబ్రవరి 2017 వరకు

సమ్మేళనంలో ఆర్య సమాజానికి సంబంధించిన ప్రముఖ మహాత్ములు వైదిక విద్వాంసులు, గురుకులాల ఆచార్యులు, నాయకులు, ప్రొఫెసర్లు, భజనోపదేశకులు పురోహితులు తదితరులు పాల్గొనుచున్నారు. సమ్మేళనములో జాతీయ-అంతర్జాతీయ సమస్యలను సమీక్షించి వాటి పరిష్కారమునకై ఆర్య సమాజము యొక్క దృక్పథమును నిర్ధారించి, ప్రత్యేకంగా సామాజిక, రాజనైతిక, ఆర్థిక మరియు ధార్మిక విషయాలపై కార్యనీతిని నిర్ణయించి దిశా-నిర్దేశము చేస్తారు. జనుల మధ్య ఆర్య సమాజమును బలోపేతము చేయుటకై తగు నిర్ణయాలు కూడ తీసుకుంటారు. కావున తమరంతా అత్యధిక సంఖ్యలో పాల్గొని సమ్మేళనమును జయప్రదం చేయగలరని విజ్ఞప్తి.

భవదీయులు

స్వామి ఆర్యవేశ్
ప్రధాన్ (అధ్యక్షులు)
సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ-న్యూ ఢిల్లీ

పండిత్ సోమ్‌దేవ్ శాస్త్రి
ముంబయి
సంయోజకులు

ప్రొ॥ విఠల్ రావు ఆర్య
మహామంత్రి (ప్రధానకార్యదర్శి)
సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ-న్యూ ఢిల్లీ

హరికిషన్ వేదాలంకార్
మంత్రి ఆర్యప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २५ अंक : १
दयानन्दाब्द : १९३
सृष्टि संवत् : १९६०८५३११७
वि.सं. : २०७३
दुर्मुखि नाम संवत्सर मार्गशिर शुक्ल पक्ष
०३-०१-२०१७

प्रधान सम्पादक
विट्ठलराव आर्य

सम्पादक मण्डल
हरिकिशन वेदालंकार
डॉ. वसुधा शास्त्री
लक्ष्मण सिंह ठाकुर
रामचन्द्र कुमार
अशोक श्रीवास्तव
डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या

वार्षिक मूल्य रू. 250-00

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद
दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24756983
फ्याक्सः 040-24557946, 24760030
Email :
aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com
acharyavithal@gmail.com
aryavithal@yahoo.co.in.
Mobile No. : 09849560691
Editor : Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.250/-**
THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

हैदराबाद सम्मेलन के सन्दर्भ में..

२, ३, ४ फरवरी २०१७ के दिनों में हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय बुद्धिजीवी सम्मेलन के सन्दर्भ में हमने पहले भी कुछ विचार विश्लेषणार्थ रखें है। निमन्त्रण पत्र में विचारार्थ ९ अंशों को तय किया है। आर्य जगत के सभी महानुभाव जानते है कि समाज सेवा, शिक्षा विशेषकर आर्ष पद्धति के अनुसार गुरुकुलों की स्थापना इसके अतिरिक्त विद्यालय आदि क्षेत्रों में आर्य महानुभाव काम करते आ रहे हैं। बदलते हुए काल परिप्रेक्ष में इनकी आवश्यकताओं और प्रासंगिकता पर गहनतम विचार करने की जरूरत है। इसीलिए पारम्परिक तरीकों से चलने वाले सारे कार्यक्रमों को और प्रभावशाली बनाने की योजनाओं पर ध्यान देने की जरूरत है। साथी प्रासंगिकता को भी समय-समय पर सिद्ध करने की जरूरत है। अतः ३ से ९ अंशों पर पधारने वाले विद्वान व महात्मा लोग इस पर चिन्तन करे और निष्कर्ष निकालें। इन सारे संदर्भों में इतनाही कहना है कि बिखरी हुई शक्ति को कैसे संजोया जाए और संगठित किया जाए। मुख्य रूप से अंश २ पर बड़ी गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। विचार से ज्यादह कार्य प्रणाली की जरूरत है। कार्य ही न हो तो विचार धरे के धरे रह जाएंगे और यह तभी सम्भव है जब कोई केन्द्रीय व्यवस्था बनाई जाए चलाई जाए। मीडिया के द्वारा प्रचार प्रसार के दो तरीके हैं। एक अपने दार्शनिक तत्वों का सकारात्मक प्रचार और दूसरा तरीका पाखण्ड का खण्डन करना है। पाखण्ड का खण्डन किए बिना अपने दर्शन का कितना भी प्रचार करले वह नई विधाओं को स्थापित नहीं कर पाएगा। अतः इस विषय पर बड़ी गम्भीरता से विचार कर कार्य नीति को तय करना होगा। इसी प्रकार अन्य कई सामाजिक मुद्दे उठते रहेंगे जिस पर कार्य नीति तय करना आवश्यक है। इसीलिए हमने गम्भीरता से चिन्तन करके पहले मुद्दा तय किया है वह है -

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान एवं उपायों के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टि कोण क्या हो ? वर्तमान में आर्य समाज आम जनता के जीवन को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विषयों पर क्या कार्य शैली अपनाये ताकि आम [illegible] के साथ आर्य समाज जुड़ सकें।

हमने पिछले अंक के सम्पादकीय में लगभग ७५ वर्ष पूर्व आर्य विद्वानों, आर्य नेताओं द्वारा तत्कालीन सन्दर्भों में आयोजित सम्मलेनों में पारित प्रस्ताओं के कुछ अंश दिए थे। उस में एक बात साफ तौर पर कही गई है कि

"आर्य समाज, समाज के स्वरूप को परिवर्तित कर सकने में सफल नहीं हो पाया है। इस सम्बन्द में उन धार्मिक आंदोलनों से शिक्षा ली जा सकती है जिन्होंने संसार में अपना धार्मिक साम्राज्य स्थापित करने में समर्थ हुए है और मानव जाति का बहुत बड़ा बाग उनका अनुयायी है। आगे यह भी स्पष्ट किया गया है कि वे धार्मिक आंदोलन अपने समय की किन्ही विकट समस्याओं का समाधान कर तथा जनता की किसी महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूर्ण करके ही विश्व के बड़े भाग को अपने प्रभाव में लाने में समर्थ हुए है। और आर्य समाज के लिए वर्तमान समय के सबसे विकट व महात्वपूर्ण समस्या न्याय पर आधारित समाज रचना की गई है।"

ऊपर के वाक्य बहुत ही महत्वपूर्ण है और आज के संदभों में समीचीन भी है। विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौति आज के भौतिकवादी विकास के मॉडल की है। यह विकास विध्वंसता की ओर ले जा रही है। इस विकास में इंसान के साथ-साथ पशु-पक्षी, कीट, पतंग समस्त जीवों का जीवन खतरे में है। खतरे में इसीलिए भी है कि इस विकास से जल, ज़मीन, जंगल, वायु सबकुछ नष्ट हो रहा है, ग्लोबल वार्मिंग का खतरा मंडरा रहा है। अतः विकास की जगह मानवीय विकास की अवधारणा को विकसित करने की जरूरत है और इसमें धार्मिक

www.thearyasamaj.org

हैदराबाद में होने जा रहे विद्वत् आर्य महा सम्मेलन में आमंत्रित संन्यासी, महात्मा, विद्वान, बुद्धिजीवी, भजनोपदेशक आदि

संन्यासी

१) स्वामी प्रणवानन्दजी
२) स्वामी अग्निवेशजी
३) स्वामी आर्यवेशजी
४) स्वामी रामवेशजी
५) स्वामी धर्मानन्दजी (उड़ीसा)
६) स्वामी श्रद्धानन्दजी
७) स्वामी सुधानन्दजी (भुवनेश्वर)
८) स्वामी विश्वम् - अजमेर
९) स्वामी व्रतानन्दजी आमसेना
१०) स्वामी दिव्यानन्दजी हरिद्वार
११) स्वामी चन्द्रवेशजी
१२) स्वामी ओमानन्दजी चितौड़गढ़
१३) स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, कामारेड्डी

विद्वान - बुद्धिजीवी

१४) डॉ. महावीर जी मीमांसक
१५) डॉ. वेदप्रताप वैदिक जी - गुड़गाँव
१६) डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी
१७) डॉ. सोमदेव शास्त्री जी - मुम्बई
१८) डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार
१९) डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी - दिल्ली
२०) डॉ. वीरेन्द्र अलंकार जी - चण्डीगढ़
२१) डॉ. शिवकुमार शास्त्री जी - हरिद्वार
२२) डॉ. रविप्रकाश जी आर्य - दिल्ली
२३) श्री अशोक आर्य - नई दिल्ली
२४) डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी - रोहतक
२५) डॉ. कमलनारायण जी आर्य - रायपूर
२६) डॉ. सुधीर कुमार जी - नई दिल्ली
२७) आचार्य योगेन्द्र जी - होशंगावाद
२८) डॉ. पूर्ण सिंह जी डबास - नई दिल्ली
२९) डॉ. धर्मवीरजी - नई दिल्ली
३०) डॉ. मोक्षराज जी - अजमेर
३१) डॉ. धमेन्द्र शास्त्री - नई दिल्ली
३२) डॉ. आनन्द कुमार जी - दिल्ली
३३) डॉ. विक्रम कुमार - चण्डीगढ़
३४) डॉ. महावीर अग्रवाल - हरिद्वार
३५) डॉ. तपेन्द्र कुमार - जयपुर
३६) आचार्य सत्यजित - अजमेर
३७) आचार्य जीव वर्धन जी शास्त्री
३८) आचार्य नागेन्द्र कुमार जी अयोध्या
३९) आचार्य उदयन जी करतारपुर
४०) आचार्य विजयपाल जी झज्जर
४१) आचार्य धनंजय कुमार जी - पौंधा
४२) पं. धर्मपालजी शास्त्री - मेरठ
४३) आचार्य कोमल जी - कोसंगी
४४) आचार्य ब्रह्मदेव जी - कोलकत्ता
४५) आचार्य दयासागर जी
४६) आचार्य आनन्द प्रकाश जी - हैदराबाद
४७) आचार्य कोमल जी
४८) अचार्य कुंजदेव मनीषी जी
४९) पं. प्रेमपाल शास्त्री जी - दिल्ली
५०) पं. अमरदेव जी शास्त्री - नई दिल्ली
५१) श्री मेघश्याम वेदालंकार जी-नई दिल्ली

महिला विद्वान - बुद्धिजीवी

५२) आचार्या नन्दिता शास्त्री जी
५३) आचार्या सूर्यादेवी जी
५४) आचार्या प्रियंवदा जी
५५) आचार्या पवित्रा वेदालंकार जी
५६) आचार्या धारणा जी
५७) डॉ. शारदा जी - उड़ीसा
५८) डॉ. अन्नपूर्णा जी - देहरादून
५९) डॉ. प्रतिभा जी पुरन्धि
६०) डॉ. वसुधा शास्त्री जी - हैदराबाद
६१) डॉ. माधुरी जी वाराणसी
६२) आचार्या सुमेधा जी - चोटीपुरा
६३) सुश्री माता निर्मला योग भारती
६४) आचार्या नीरजा देवी
६५) आचार्या सुकन्या जी - आमसेना

पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता

६६) श्री सुरेश जी अग्रवाल - अहमदाबाद
६७) श्री मिठाईलाल जी - मुम्बई
६८) श्री सत्यव्रत जी सामवेदी
६९) श्री आनन्द कुमार जी कोलकत्ता
७०) श्री अरुण जी - अबरोल
७१) श्री प्रकाश जी आर्य - महु
७२) श्री ठा. विक्रम सिंह जी
७३) श्री विनय आर्य - दिल्ली
७४) श्री धर्मपाल आर्य - दिल्ली
७५) श्री डॉ. अशोक आर्य - उदयपुर
७६) श्री देवेन्द्रपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.
७७) श्री धर्मवीर बत्रा - पंचकूला
७८) श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव खण्डवा
७९) श्री सत्यवीरजी शास्त्री - अमरावती
८०) श्री सोमदत्त शास्त्री - चण्डीगढ़
८१) श्री गोविन्द सिंह जी भण्डारी-उत्तराखण्ड
८२) श्री मनमोहन कुमार जी-देहरादून

समुदायों का दायित्व क्या हो इस पर विचार करने की जरूरत है अर्थात् sustainable development and role of the religion एक मुद्दा है जिसपर हमें विचार करना है और राष्ट्रीय स्तर पर कई समस्याएं और मुद्दे हैं पर एकाद मुद्दा जो आम जनता के जीवन प्रभावित कर रहा हो और सरकारी खजाने को विपदा में डाल रहा हो जैसे शराब का मुद्दा जो व्यक्ति, परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र को खोखला कर रहा है पर विचार करना और कार्य योजना को तैय्यार करना बहुत मुख्य है । विचार को फैलाना अर्थात जन-जागृति एक अंश है पर यहीं पर रुके रहना काम की प्रासंगिकता को सिद्ध नहीं करता अतः विचार किए हुए मुद्दे पर कार्य योजना को बनाया जाना बहुत मायने रखता है । कार्य योजना ही आपको कार्य करने से ताकत और शक्ति प्रदान करता है जो आपको और संगठन को मजबूती के साथ उभार कर पहली पंक्ति में लाकर खड़ा करता है। हम चाहते है कि विद्वत् सम्मेलन में इन सब बातों पर गम्भीरता से चिंतन कर कार्य नीति तय करेंगे । अवलोकनार्थ पूर्व में आर्य सम्मेलनों में पारित प्रस्तावों की एक झलक अगले पन्ने में देखने को मिलेगा । अवश्य अवलोकन करने का निवेदन है ।

www.thearyasamaj.org

८३) श्री हॉकम् सिंह जी आर्य-रुडकी
८४) श्री रमाकान्त सारस्वत जी-आगरा
८५) श्री रामसिंह जी आर्य-जोधपुर
८६) श्री विरजानन्द जी-बहरोड़
८७) श्री आचार्य सन्तराम जी
८८) श्री ब्र.दीक्षेन्द्र जी-हरियाणा
८९) श्री रामानन्द प्रसाद जी-दानापुर
९०) श्री डॉ. लक्ष्मणदास जी आर्य-म.प्र.
९१) श्री सदाविजय जी आर्य - महाराष्ट्र
९२) आचार्य सुभाष जी - एडशी
९३) श्री महेन्द्र सिंह जी शास्त्री - गुडगाँव
९४) श्री सुबेदार मेजर विजय आर्य
९५) श्री मधुरप्रकाश जी - दिल्ली
९६) श्री आर.एस. तोमरजी - दिल्ली
९७) श्री महेन्द्र भाई जी - दिल्ली
९८) श्री देवमुनि जी - म.प्र.
९९) श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी - ओड़िसा
१००) श्री दयाकृष्ण काण्डपालजी -अल्मोड़ा
९०१) श्री डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी-दिल्ली
९०२) श्री यशपाल यश जी-ऐड्वोकेट (जयपूर)
९०३) प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी - पठानकोट
१०४) प्रो. ईशप्रकाश शर्मा जी - देहरादून
१०५) प्रो. श्योताज सिंह जी - नई दिल्ली
१०६) श्री पूर्णचन्द्र जी आर्य - रांची
१०७) श्री डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार जी रोहतक
१०८) श्री अशोक गुलाटी जी आर्य - दिल्ली
१०९) श्री ओम्प्रकाश वर्मा - जयपूर
११०) श्री धर्मवीर बत्रा - चण्डीगढ़
१०१) श्री वाचोनिधि जी - गुजरात
१०२) श्री संजय सत्यार्थी जी - बीहार
१०३) श्री आचार्य भद्रकाम वर्णी - नई दिल्ली
११४) डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी - दिल्ली
११५) श्री किरणजीत सिंह सिंधु (भगतसिंह का भतीजा)
११६) आचार्य विश्वपाल जयन्त जी - कोटद्वार
११७) डॉ. रामप्रकाश सरस - दिल्ली
११८) डॉ. प्रमोद आचार्य - हिसार
११९) डॉ. जयदेव शर्मा जी - जयपुर
१२०) प्रो. विनय विद्यालंकार जी - नैनिताल
१२१) आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र - नई दिल्ली
१२२) श्री राजेन्द्र शर्मा जी - नई दिल्ली
१२३) श्री मधुसूधन जी शास्त्री - प.बंगाल
१२४) आचार्य योगेश शास्त्री जी - कोलकत्ता
१२५) आचार्य विष्णु मित्र जी - बिजनोर
१२६) श्री धर्मवीर शास्त्री जी - नई दिल्ली
१२७) श्री रणवीर सिंह जी शास्त्री - नई दिल्ली
१.२८) डॉ. सीमा जी - चितौड़गढ़
१२९) डॉ. विद्यानंद जी - हैदराबाद
१३०) आचार्य उदयन जी - मेदक
१३१) श्री रघुराज शास्त्री जी - कानपूर
१३२) श्री सत्यवीर जी - नरसापूर

भजनोपदेशक

१३३) श्री सहदेव जी बेधडक
१३४) श्री कैलाश कर्मठ जी
१३५) श्री नरेश दत्त जी
१३६) श्री योगेश दत्त जी
१३७) श्री अमरसिंहजी
१३८) श्री सत्यपाल पथिक जी
१३९) श्री सत्यपाल सरल जी
१४०) सुश्री अंजली देवी जी - हरियाणा
१४१) पं. प्रियदत्त शास्त्री जी

సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ ఆధ్వర్యమున

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సౌజన్యంతో

హైదరాబాదు నగరంలో
జాతీయ స్థాయి
విద్వాంసుల - బుద్ధిజీవుల
బృహద్ సమ్మేళనం

2 నుండి 4 ఫిబ్రవరి 2017 వరకు

ఈ సందర్భమున

బృహద్
రాష్ట్రభృత్ మహాయాగము

నిర్వహించబడును

స్థానము : వైదిక్ ఆశ్రమ కన్యాగురుకులం
ఉమానగర్, కుందన్‌బాగ్, బేగంపేట్,
హైదరాబాద్.

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के
तत्वावधान में

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के सौजन्य से आयोजित

राष्ट्रीय आर्य बुद्धि जीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

हैदराबाद के संदर्भ में

बृहद् राष्ट्रभृत महायज्ञ का आयोजन

2, 3, 4 फरवरी 2017

स्थान : वैदिक आश्रम कन्यागुरुकुल
उमानगर, कुन्दनबाग, बेगमपेट,
हैदराबाद

www.thearyasamaj.org

इतिहास के पन्नों से पूर्व में आर्य समाज द्वारा आयोजित आर्य महा सम्मेलनों में विचार विमर्श के बाद पारित ऐतिहासिक प्रस्तावों पर एक दृष्टि

आर्यसमाज की शिक्षा-प्रणाली के आदर्शों का प्रचार करे, उसे सर्वप्रिय बनाये और देश के शिक्षणालयों में उसे प्रचारित करे। आर्यसमाज के विस्तृत और बहुविध शिक्षा-सम्बन्धी कार्य को दृष्टि में रखते हुए यह सम्मेलन सार्वदेशिक सभा का ध्यान इस ओर आकर्षित करता है कि वह विद्यार्य सभा संगठित करने की योजना करे जो आर्यसमाज के शिक्षा-सम्बन्धी कार्य में यथा-सम्भव पारस्परिक सहयोग, समानता और आवश्यक सुधार लाने की चेष्टा करे, और यत्न किया जाए कि यह विद्यार्य सभा भविष्य में अखिल बारतीय दयानन्द पीठ का रूप धारण कर सके।''

''आर्य समाज द्वारा बहुत-से गुरुकुलों, संस्कृत विद्यालयों तथा स्कूल-कॉलिजों की स्थापना की जा चुकी थी। इस प्रस्ताव द्वारा इन सब शिक्षण-संस्थाओं को एक अखिल भारतीय दयानन्द विद्यापीठ या विश्वविद्यालय के अधीन संचालित किये जाने का विचार प्रस्तुत किया गया था, जो बहुत उपयोगी था।''

''आर्य संस्कृति की रक्षा और स्थिरता, आर्यसमाजियों की आये दिन बढ़ती हुई राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा अन्य सम्प्रदायों की राजनैतिक प्रगतियों पर दृष्टि रखने, तथा आवश्यकता और औचित्य के अनुसार उन्हें सहयोग देने के अभिप्राय से यह सम्मेलन निश्चय करता है कि एक 'राजार्य सभा' की स्थापना की जाये तथा सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना की जाये कि वह इस सभा को संगठित कर देवे।'' राजार्य सभा की स्कीम तैयार करने के लिए एक उपसमिति भी सम्मेलन द्वारा बना दी गयी, जिसके सदस्य महात्मा नारायण स्वामी, बाबू पूर्णचन्द्र, बाबू श्यामसुन्दर लाल, महाशय कृष्ण, कुँवर चाँदकरण शारदा और प्रोफेसर ताराचन्द थे। पण्डित देवशर्मा को इस उपसमिति का संयोजक नियत किया गया। सन् १९२६-३२ तक भारत के सार्वजनिक जीवन में राजनीति का महत्त्व बहुत बढ़ गया था, और नेशनल कांग्रेस द्वारा स्वतन्त्र भारत की शासन-पद्धति तथा विविध सम्प्रदायों के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी विचार-विमर्श शुरू कर दिया गया था। इस दशा में यह सर्वथा स्वाभाविक ही था, कि आर्यसमाज भी राजनैतिक विषयों में दिलचस्पी लेने लगे और''

''क्योंकि वेदों में 'अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूतः या अकृन्वन्न वयनमा अतन्वत' इत्यादि मन्त्रों में स्वदेशी वस्त्रों के धारण और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का स्पष्ट आदेश है प्रचार का प्रयत्न किया था, अतः यह आर्य महासम्मेलन समस्त आर्य देवियों सज्जनों से अनुरोध करता है कि वे अपना धार्मिक कर्तव्य समझकर सदा स्वदेशी वस्त्रों के धारण करने और यथासम्भव स्वदेशी वस्तुओं के ही उपयोग का व्रत धारण करें।'' एक अन्य प्रस्ताव द्वारा तथाकथित अछूत जातियों को हिन्दुओं से पृथक् प्रतिनिधित्व देने की बात का इन शब्दों में विरोध किया गया था - ''इस बात को दृष्टि में रखते हुए कि वैदिक धर्म के अनुसार कोई अस्पृश्य नहीं है, यह सार्वदेशिक सम्मेलन राज्य-शासन में कही जानेवाली अस्पृश्य दलित जातियों को हिन्दुओं से पृथक् प्रतिनिधित्व को, विशेषतया दलितों और साधारणतया सारे हिन्दुओं के धार्मिक तथा सामाजिक संगठन व उत्थान के लिए अत्यन्त हानिकारक समझता है, और (पृथक्) प्रतिनिधित्व को स्वीकार न करने के विषय में महात्मा गांधी जी का समर्थन करता है, और ऐसे सब लोगों के काम निन्दनीय समझता है जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए दलित हिन्दुओं के पृथक् प्रतिनिधित्व की स्थापना द्वारा हिन्दू जाति को खण्ड-सिद्धि के लिए दलित हिन्दुओं के पृथक् प्रतिनिधित्व की स्थापना द्वारा हिन्दू जाति को खण्ड-खण्ड करके निर्बल बनाने तथा अछूत श्रेणियों को सर्वथा अछूत बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।''

जम्मू-काश्मीर राज्य में मुसलमानों के एक विशेष समुदाय द्वारा जनता के आधारभूत राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए चलाये गये आन्दोलन को विश्व-मुसलिम आन्दोलन से प्रेरित बताकर उसका विरोध किया गया था। यह स्पष्ट है, कि बरेली के सार्वदेशिक आर्यमहासम्मेलन ने अपने को केवल धार्मिक व सामाजिक विषयों तक ही सीमित न रखकर राजनैतिक विषयों पर भी आर्यसमाज के लोकमत को अभिव्यक्त किया था। इस समय भारत में स्वराज्य के लिए संघर्ष प्रबल रूप से प्रारम्भ हो चुका था, अतः कोई भी समाज या संगठन उससे सर्वथा अछूता नहीं रह सकता था।''

....व्यापक संस्था के लिए भी यह विचार करना आवश्यक हो गया था, कि देश की राजनीति के साथ उसका क्या संबंध होना चाहिए।

''वेद जिस धर्म का प्रतिपादन करते हैं, अथवा आर्यसमाज जिस धर्म का प्रचार करता है, उसमें अभ्युदय (लोकोन्नति) और श्रेयस् (परलोकोन्नति), दोनों के अन्तर्गत होने से राजनीति भी सम्मित है और पूर्ण रीति से सम्मिलित है। राजनीति को धर्म से बाहर नहीं कर सकते। आर्यसमाज ने व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक नर-नारी को स्वतन्त्रता दी है कि प्रचलित राजनैतिक स्कूलों में से जिसमें वे चाहें अपने अन्तःकरण की प्रेरणानुसार भाग लेवें।''

आर्यसमाज के किसी राजनैतिक दल का समर्थन करने के विरुद्ध होते हुए भी महात्मा नारायण स्वामी ने राजार्य सभा के संगठन की आवश्यकता स्वीकार की थी। उनके शब्दों में ''इस विभाग (राजार्य सभा) के बनाने की आवश्यकता इस समय और भी बढ़ गयी है कि हमारे देशभाई मुसलमानों में से कुछेक अदूरदर्शी मुसलमानों ने राजनैतिक परदे की आड़ में आर्यसंस्कृति को नष्ट करने का विशेष यत्न शुरूकर दिया है। काश्मीर का आन्दोलन उसी की एक शाखा है। इसलिए आर्यसमाज के लिए आवश्यक है कि ऐसे उपायों को काम में लावे जिनसे आर्य संस्कृति को नष्ट करने का यह प्रयत्न निष्फल हो सके। आर्यसमाज के ये उपाय भी राजनैतिक रंग लिये हुए होंगे, इसलिए यह काम भी इसी राजार्य सभा के अधीन रखा जा सकता है। आर्यसमाज के विस्तार के साथ आर्यों की संख्या नित्यप्रति बढ़ती जा रही है। इसलिए स्वाभाविक है कि उसकी राजनैतिक आवश्यकताएँ भी ऐसी हों, जिनको पूरा करने के लिए यत्न की जरूरत हो। इस काम के करने के लिए भी आर्यसमाज के लिए आवश्यक है कि उसका अपना एक राजनैतिक विभाग हो। यह जरूरत भी इसी राजार्य सभावाले विभाग से पूरी हो सकेगी। प्रत्येक प्रकार के बाद इस विभाग का खोलना अनिवार्य-सा प्रतीत होता है।''

''समाजों के आर्य सभासद्, अन्तरंग सदस्य, पदाधिकारी, प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा के सदस्य बनने के लिए सदाचार की मर्यादा स्थिर की जाए। उक्त सदस्यों के लिए निरामिष-भोजी होना, मादक द्रव्यों का सेवन न करना, व्यभिचारी न होना तथा घूस व रिश्वत न लेनेवाला होना आवश्यक हो।''

www.thearyasamaj.org

इतिहास के पन्नों से पूर्व में आर्य समाज द्वारा आयोजित आर्य महा सम्मेलनों में विचार विमर्श के बाद पारित ऐतिहासिक प्रस्तावों पर एक दृष्टि

सब मनुष्यों को **ऐसा अवसर देने की व्यवस्था करनी होगी, जिससे कि वे अपने शरीर, मन एवं आत्मा को उन्नत कर अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकें, और अपनी जो अर्न्तानहित शक्ति, सामर्थ्य व क्षमता है, उसे भली-भाँति विकसित कर सकें। साथ ही, मनुष्यों की सामूहिक उन्नति पर भी आर्यसमाज को ध्यान देना होगा ।** सामूहिक जीवन की उन्नति के लिए यह आवश्यक है, कि **समाज का निर्माण इस ढंग से हो जिसमें कि सबके प्रति न्याय हो सके। जब तक सब मनुष्य अपनी योग्यता, रुचि एवं** क्षमता (गुण, कर्म, स्वभाव) के अनुरूप कार्य एवं सामाजिक स्थिति प्राप्त न कर सकें, समाज का संगठन न्याय पर आधारित नहीं हो सकता ।

इसका साधन गुणकर्मानुसार वह वर्णव्यवस्था है, जिसका निरूपण महर्षि ने अपने ग्रन्थों में स्पष्ट एवं विशद् रूप से किया है। शक्ति और योग्यता या गुण, कर्म, स्वभाव में सब मनुष्य एक सदृश नहीं होते। अतः उनमें वर्णों या वर्गों का होना स्वाभाविक है। पर उनका आधार जन्म न होकर गुण, कर्म और स्वभाव का भेद होना चाहिये, महर्षि का यही मन्तव्य है। सबको शिक्षा प्राप्त करने का पूर्णतया समान व एकसदृश अवसर होने पर भी उनमें गुण, कर्म, स्वभाव के जो अन्तर हों, उनके अनुसार उनका वर्ण निर्धारित किया जाए और अपने वर्ण के अनुरूप सबको काम-धन्धा, कार्य, व्यवसाय एवं सामाजिक स्थिति प्राप्त हो । पर **अभी यह गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था की स्थापना कर समाज संगठन के स्वरूप को परिवर्तित कर सकने में आर्य समाज सफल नहीं हो पाया है । यह कार्य आर्य समाज के लिए आवश्यक और शेष है ।** पर इस प्रयत्न का स्वरूप क्या हो, इस सम्बन्ध में **उन धार्मिक आन्दोलनों से शिक्षा ग्रहण की जा सकती है, जो संसार में अपना 'धर्म साम्राज्य' स्थापित करने में समर्थ हुए, और मानव जाति का बहुत बड़ा भाग जिनका अनुयायी है।**

स्वामी दयानन्द सरस्वती और जिन महानुभावों ने अपने कार्य को जारी रखने के लिए जिस आर्यसमाज की स्थापना की, उसे केवल हिन्दू धर्म में ही सुधार नहीं करना है, केवल हिन्दू समाज की कुरीतियों व अन्ध-विश्वासों को ही दूर नहीं करना है, अपितु सम्पूर्ण संसार व सम्पूर्ण मानव समाज को सत्य धर्म का मार्ग प्रदर्शित कर सब का हित-कल्याण सम्पादित करना है । देश, नस्ल, जाति और रंग की सब सीमाओं को अतिक्रान्त कर जिसका कभी भूमण्डल पर सर्वत्र प्रचार था और जिसका अनुसरण कर सब मनुष्य 'आर्य' हो गये थे। इस दिशा में अभी आर्यसमाज कोई विशेष कार्य नहीं कर सका है ।

सामान्यतः जिस बात से मनुष्यों को अपना स्पष्ट लाभ प्रतीत होता हो, उसे अपनाने में वे देर नहीं करते । पर अपने स्वार्थ के लिए इतिहास में कुछ महानुभावों ने यज्ञ द्वारा ही स्वर्ग की प्राप्ति होती है का उद्‌बोधन कर दिशा भ्रमित किया और व्यवस्था को तोड़ मरोड़ दिया ।

इसीलिए ब्राह्मण यदि उन गुणों को क्रिया रूप में अपने अन्दर नहीं लाता जो किसी मनुष्य को ब्राह्मण बनाते हैं, अब्राह्मणों का आचरण करता है, पर मुख से प्रार्थना करता है - मैं इन्द्र को बुलाता हूँ, मैं वरुण को बुलाता हूँ, मैं प्रजापति, ब्रह्मा, महेश और यम को बुलाता हूँ ऐसे विचार समाज को पाखण्ड की ओर ले गए हैं । अतः यह जानना आवश्यक है कि सद् आचरण तथा सद्‌गुणों से ही मनुष्य अपनी उन्नति कर सकता है । याज्ञिक कर्मकाण्ड का जो रूप उस समय विकसित हो गया था, उसका उनकी दृष्टि में कोई लाभ नहीं था तथा अत्यधिक भोग-विलास में समाज डूबता चला गया ।

वैदिक मान्यताओं के अनुसार ऋषिमुनियों को तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती को स्वस्थ्य समाज के लिए सम्पत्ति पर व्यक्तिगत स्वत्व भी उन्हें समुचित प्रतीत नहीं होता था । जिस देश में या समाज में नस्ल, जाति, रंग आदि के भेदभाव के बिना सब मनुष्य सम्मिलित होते हों और वे केवल अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न होकर सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझते हो ऐसे समाज की व्यवस्था का मूल आधार गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था है अतः इस देश के समाज तथा धर्म को वैदिक आदर्शों के अनुसार परिवर्तित करने के बाद ही विदेशी व विजातीय लोगों को प्रभावित कर सकना सम्भव होगा । गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था का जिस रूप में निरूपण किया है, क्रियान्वित कर देने पर ऊँच-नीच, आर्थिक विषमता और बेरोजगारी आदि सब समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, और उस द्वारा एक ऐसे सामाजिक और आर्थिक संगठन का निर्माण कर सकना सम्भव हो जाता है जो पूर्णतया न्याय पर आधारित हो । सबसे पूर्व आर्यसमाज को गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था के आदर्श को क्रियान्वित कर भारत में एक ऐसा सामाजिक संगठन स्थापित करना होगा, जो न्याय पर आधारित हो, जिसमें जिसमें प्रत्येक मनुष्य की सामाजिक स्थिति और आर्थिक आमदनी उसकी योग्यता व क्षमता के अनुरूप हो, और जिसमें सबको योगय्ता प्राप्त करने और उन्नति करने का समान अवसर मिलता हो ।

इतिहास में अबतक जिन धार्मिक आन्दोलनों ने व्यापक रूप धारण किया है, वे सब अपने समय की किन्हीं विकट समस्याओं का समाधान कर तथा जनता की किसी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को पूर्ण करके ही विश्व के बड़े भाग को अपने प्रभाव में लाने में समर्थ हुए हैं । वर्तमान समय की सबसे विकट व महत्त्वपूर्ण समस्या न्याय पर आधारित समाज की रचना हो । समाज के संगठन को गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था पर आधारित किए जाने पर ही वैदिक धर्म जिन मान्यताओं को प्रतिपादित करता है वे वैदिक मान्यताएं, सदाचार के नियम और जीवन के आदर्श समाज में स्थापित किए जा सकते है ।

www.thearyasamaj.org

'मनुष्य के पतन का एक मुख्य कारण लोभ की प्रवृत्ति'

-मनमोहन कुमार आर्य

काम, क्रोध, लोभ व मोह मनुष्य के प्रबल शत्रु हैं जो मनुष्य का जीवन नष्ट कर देते हैं। मनुष्य मदिरा के नशे की भांति जीवन में इनके वशीभूत रहता है। इनसे बचने का उपास केवल अविद्या का नाश है जिसके अनेक उपाय हैं, परन्तु बहुत से लोगों को इन उपायों का ज्ञान नहीं है। यह अविद्या रूपी शत्रु उन्हें अपने पाश व बन्धनों में जकड़ लेती है जिससे बहुत से मनुष्य इसके प्रभाव से अपना जीवन दुःखमय बना लेते हैं। **इसी कारण महर्षि दयानन्द को आर्य समाज के नियमों में प्रावधान करना पड़ा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।** पहला प्रश्न तो यह है कि मनुष्यों को पता होना चाहिये कि वह अविद्या से ग्रस्त हैं व उसे उन्हें छोड़ना हैं, तभी वह अपना सुधार कर सकेंगे। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि मनुष्य के जीवन पर उसके प्रारब्ध का भी प्रभाव रहता है। कुछ संस्कारी आत्मायें होती हैं जिनमें बुराईयां कम व अच्छाईयां अधिक होती हैं। कुछ आत्मायें ऐसी होती हैं जो अपने प्रारब्ध और इस जीवन के परिवेश के अनुसार सत गुणों की प्रधानता से युक्त होती हैं और अधिकांश रज व तमों गुणों से युक्त होती हैं जिसका प्रभाव उनके स्वभाव, प्रकृति व व्यवहार आदि पर रहता है। इसे कोई सच्चा ज्ञानी ही जान सकता है व उसे दूर करने के उपाय बता सकता है।

लोभ क्या है, लोभ लालच को कहते हैं। लालच का अर्थ है कि विना उचित तरीकों के व धर्म, अधर्म, कर्तव्य, अकर्तव्य, उचित, अनुचित तथा आचार अनाचार का विचार किए अपनी इच्छित व पसन्द की वस्तुओं व पदार्थों को प्राप्त करने की अभिलाषा व इच्छा करना व उसमें अविवेकपूर्वक प्रवृत्त होना। लोभ के कारण समाज में अव्यवस्था फैलती है। यदि कोई व्यक्ति अवैध तरीकों से अनुचित आचरण से किसी वस्तु को प्राप्त करता है तो वह शासन के नियम के अनुसार अपराधी माना जाता है और ईश्वरीय नियमों में भी अपराधी होता है। हमारे समाज में नाना प्रकार के चोर होते हैं। वह लोभ की प्रवृत्ति व अपनी आदत के अनुसार अनुचित तरीकों से दूसरों का धन व सम्पत्तियों को हड़पने का कार्य करते हैं। कई बार प्रशासन के भ्रष्ट लोग भी उनके सहयोगी बन जाते हैं। उनका काम आसान हो जाता है और वह बुरे कामों में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। लोकोक्ति है कि धन से मनुष्य की तृप्ति कभी नहीं होती। उसकी लोभ की प्रवृति बढ़ती जाती है और एक समय ऐसा आता है कि जब परिस्थितियां उनके प्रतिकूल हो जाती हैं और वह कानूनी शिंकजे में फंस जाता है। इससे उसका अपमान तो होता ही है, उसे नाना प्रकार के दुःख भी होते हैं। सद्ज्ञान प्राप्त न होने के कारण वह उससे बचने के उपाय तो करता है परन्तु उसे अपनी प्रवृत्ति बदलने की शिक्षा कहीं से नहीं मिलती। आजकल ऐसे बहुत से मामले प्रकाश में आ रहे हैं जब भ्रष्ट आचरण से कमाये कालाधन रखने वाले व गलत काम करने वाले कानून की गिरफ्त में आ रहे है और अपमानित व दुःखी हो रहे हैं। यह ईश वर की व्यवस्था है कि **'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं'** अर्थात् शुभ व अशुभ कर्म करने वालों को अपने किये हुए कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। अपराध सार्वजनिक होने पर लोभी मनुष्य क्लेशित व दुःखी होता है तथा पछताता है। अतः मनुष्य को अपने मन व लोभ पर नियन्त्रण रना चाहिए। परन्तु इसका उपाय कहां से व किससे पता चल सकता है ?

इसका उपाय आर्य समाज वा वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से मिलता है। इसके साथ योगाभ्यास, सन्ध्या व पंचमहायज्ञो को करने वाले भी पाप व दुष्कर्मों सहित सभी प्रकार के मिथ्याचरणों से बच सकते हैं। **लोभ एक प्रकार का आत्मा का वा आत्मा में विकार है।** इसको आत्म ज्ञान, जिसे विद्या कह सकते हैं, उससे दूर किया जा सकता है। विद्या सच्चे वैदिक विद्वानों की शरण में जाकर उनके उपदेश व सत्संग से प्राप्त होती है। वेदों एवं वैदिक साहत्य सहित ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि के अध्ययन व स्वाध्याय से भी अविद्या को दूर किया जा सकता है। योगाभ्यास, सन्ध्या आदि पंचमहायज्ञों से भी अविद्या को कम वा दूर किया जा सकता है। यह सब कुछ करने के बाद भी हो सकता है व प्रायः होता है कि लोभ ज्ञान के स्तर पर तो दूर हो जाये परन्तु आचरण से पूरी तरह दूर न हो। इसका उपाय यह है कि लोभ से होने वाली बड़ी बड़ी हानियों की सच्ची घटनाओं से सम्बन्धित साहित्य को ध्यान पूर्वक पढ़ा जाये व उसे पढ़ कर लोभ की प्रवृत्ति को छोड़ने का संकल्प लिया जाये। **यदि संकल्प नहीं करेंगे तो लोभ की प्रवृत्ति कभी भी आक्रमण कर सकती है और मनुष्य से पाप व अधर्म करा सकती है।** अतः लोभ की प्रवृत्ति से होनी वाली बड़ी बड़ी हानियों की घटनाओं पर ध्यान देना चाहिये और शुभ संकल्प धारण करने चाहिये। यह ध्यान रखना चाहिये कि एक शुभ संकल्प मनुष्य को बहुत आगे अर्थात् उन्नति की ओर ले जाता है। **ऋषि दयानन्द ने सन् १९३९ की शिवरात्रि को सच्चे शिव वा ईश्वर को जानने व उसे प्राप्त करने का संकल्प लिया था। इस संकल्प ने उन्हें विश्व का श्रेष्ठ व सर्वोत्तम धार्मिक विद्वान व विश्व गुरु बना दिया।** यज्ञों में पशु हिंसा के विरोध का संकल्प लेने वाले महात्मा बुद्ध भी अपने समय में विश्व के पूज्य बने थे। हम स्वयं भी एक मित्र के द्वारा आर्य समाज के सम्पर्क में आये और हमने ऋषि दयानन्द के जीवन चरितों सहित उनके प्रायः सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया। इससे हमें अनेक अच्छे मित्र तो मिले ही साथ में हमारी अविद्या भी कम

शेष पृष्ठ १० पर

www.thearyasamaj.org

अपना जन्मचरित्रज

(दयानन्द सरस्वती)

नामकरण-संस्कार

मेरे जन्म के दिन से सौ दिन बाद मेरे पितामह और हमारे कुलपुरोहित के सहयोग से मेरा नामकरण-संस्कार हुआ था। उस समय भी एक झंझट पैदा हो गया था। पिता जी ने चाहा था कि पुत्र का नाम शिवजी के नाम का संकेत करता हो और माता जी चाहती थीं कि पुत्र का नाम विष्णु भगवान् के नाम के अनुसार हो। इससे माता-पिता के बीच में मत-भेद पैदा हो गया था। इस दृश्य को देखकर निमन्त्रित शतशः व्यक्ति स्तम्भित रह गए थे। मेरे मातामह ने मीमांसा कि पुत्र के दो नाम रखे जाते हैं-एक शिव जी के नाम के अनुसार और दूसरा विष्णु भगवान् के नाम के अनुसार। ऐसा ही दोनों को स्वीकार हो गया था। तदनुसार पिता जी और माता जी मुझको अपने-अपने रुचिकर नाम से पुकारते थे।

एक दुर्घटना

मैं धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। देखभाल करने के लिए पिताजी ने मुझको रत्नाबाई नाम की धायी के हाथों में समर्पित कर दिया था। मुझे स्नान करवाना, खिलाना, पिलाना, बाहर ले जाकर घुमाना-सब कुछ रत्नाबाई के ऊपर छोड़ दिया गया था। एक वर्ष के बाद मेरी जन्म-तिथि का उत्सव मनाया गया। ब्राह्मणों को भोजन करवाना, गरीब-दुःखियों को अन्न-वस्त्र देना, नृत्य-संगीत और शोर-गुल चल रहा था। रत्नाबाई को माताजी ने पुत्र को बाहर शान्त स्थान में घुमा लाने का आदेश दिया था। रत्नाबाई मेरी धायी माँ थी। आदर, यत्न और स्नेह के साथ मुझको खिलाती-पिलाती थी। मेरी रुग्णावस्था में रत्नाबाई को निद्रा नहीं आती थी, खाना-पीना छोड़ देती थी, मेरी शय्या के पास आँखों में आँसू लेकर उपस्थित रहती थी। मेरे प्रति उसका माता का सा स्नेह और ममता लगी रहती थी। आज उस धायी माता का चंचल मन विकृत हो गया। हजारों रुपये के जेवर पहने हुए मुझको गोदी में लेकर घूमती हुई मेरी धायी माता मुझे नदी के किनारे ले जाकर एक निर्जन स्थान पर पहुँच गयी थी। वहाँ वह मेरे शरीर से सारे आभूषण उतारकर और अपने कपड़े के आँचल में सबको बाँधकर, मेरे मुख को अन्तिम बार चूमकर मुझको नदी के पानी में फेंक देने के लिए तैयार हो गई थी, परन्तु दो बार मुझको फैंकने के लिए पानी के अन्दर उतरकर भी वह मुझे फेंक नहीं सकी क्योंकि मैं हँसने लगा था। सो मेरे मुख पर धायी माता ने अस्वाभाविक रूप की हँसी देखी थी जिससे उसका हृदय परिष्कृत हो गया। अतः मुझको चूमती हुई पानी से ऊपर उठी और भीगे कपड़े पहने हुए ही उसने मुझे माता के सम्मुख लाकर छोड़ दिया। इस दृश्य को देखकर रत्ना के पीछे बहुत-से आदमी हो लिए थे। रत्नाबाई ने चिल्लाते हुए सबों के सम्मुख सारा हाल विस्तृत रूप से कह सुनाया और आँचल से जेवरों को खोलकर उन्हें मेरी माता के सम्मुख रख दिया और मुझको एक बार गोदी में उठाकर चूमा और - "मैं प्रायश्चित करूँगी, मैं प्रायश्चित करूँगी", ऐसा चिल्लाती हुई भागकर चली गई। तब तक पिता जी भी आ गए थे। उन्होंने सब वृत्तान्त सुना। तब सब आदमियों ने एक स्वर से यही कहा कि "धात्री पागल हो गई है, उसका इलाज होना चाहिए।" रत्नाबाई को वापस लाने के लिए तीन सिपाही भेजे गए किन्तु मेरी धायी माता मिली नहीं। तीन दिन बाद समाचार मिला कि दो कोस की दूरी पर एक पुराने मन्दिर में रत्ना ने गले में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। रत्नाबाई का कोई नहीं था। अतः पिता जी ने रत्नाबाई के लिए पण्डितों की सम्मति के अनुसार श्राद्ध, शान्ति और मेरी जीवन-रक्षा के लिए पूजा-पाठ किया था और पीछे बोधगया तक आकर रत्नाबाई के उद्धार के लिए पिंडदान किया था। इस घटना को मैंने माता-पिता और दूसरों के मुख से बार-बार सुना था। मेरे मन में संन्यासी जीवन के अन्दर भी इस घटना से मेरे माता-पिता और रत्नाबाई के चरित्र उज्जवल होकर रहे हैं, इनको मैं भूल नहीं सका।

इस रूप से मैं माता-पिता को संतान-लाभ का सुख और दुःख देता हुआ बड़ा होने लगा। माता-पिता पहले-पहल भगवान् से केवल एक ही सन्तान के लिए प्रार्थना करते थे। अब पिता जी शिवजी से कार्तिकेय और सरस्वती जैसी कन्याएं माँगती थीं। पीछे और सन्तान माता-पिता को प्राप्त हुई थीं। हम सब मिलकर माता-पिता के पाँच सन्तान पैदा हुए थे। प्रथम मैं, दूसरी लड़की, तीसरा लड़का, चौथी लड़की और पाँचवाँ लड़का। पाँच सन्तान पाकर माता-पिता दोनों सुखी थे।

विद्यारम्भ-संस्कार

मैंने पाँचवें वर्ष में देवनागरी अक्षर पढ़ने का आरम्भ किया था और मुझको कुल की रीति की शिक्षा भी माता-पिता आदि किया करते थे। बहुत से धर्मशास्त्रादि के श्लोक और सूत्रादिक भी कण्ठस्थ कराया करते थे।

पंचम वर्ष की आयु में मेरे पिता ने मेरा विद्यारम्भ संस्कार किया था। पिता ने चाखड़ी से कृष्णवर्ण के प्रस्तर पर मेरे हाथ से स्वर-वर्ण और व्यंजन-वर्ण लिखवाये थे। इस उपलक्ष्य में पूजा-पाठ और ब्राह्मण-भोजन हुआ था। अब से मेरे पिता और अभिभावक मुझका कुल-परम्परागत धर्माचरण के साथ-साथ धर्मशास्त्र-पाठ और भिन्न-भिन्न स्तवन-श्लोक और रामायण, महाभारत, पुराणादि से कहानियाँ याद कराने लगे। तब से मैं वेदमंत्र भी कण्टस्थ करने लगा था। इस रूप से मेरे तीन वर्ष बीत गए

www.thearyasamaj.org

थे। मेरे अपर भ्राताओं को भी इसी तरह की शिक्षा दी जाती थी परन्तु मेरी अपर बहनों के लिए इस तरह की शिक्षा-दीक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था। माता जी के पास हम सब भाई-बहन मिलकर महाभारत और रामायण की कहानियाँ सुना करते थे। माता जी को लिखना नहीं आता था, लेकिन पढ़ना आता था। मेरी माता जी कहा करती थीं कि लड़कियों के लिए लिखना पाप है और पढ़ना पुण्य है। गुरुजनों के प्रति, अतिथियों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए, माता जी और पिता जी हम सब भाई-बहनों को यह शिक्षा देते थे। गृह में हमको तीन वर्ष में इस रूप की कुल-परम्परागत धर्म की और व्यवहार की शिक्षा मिल गई थी।

यज्ञोपवीत-संस्कार

फिर ८ आठवें वर्ष में मेरा यज्ञोपवीत कराके गायत्री, संध्या और उसकी क्रिया भी सिखा दी गई थी। और मुझको यजुर्वेद की संहिता का आरम्भ कराके उसमें से प्रथम रुद्राध्याय पढ़ाया गया था और मेरे कुल में शैव मत था, उसी की शिक्षा भी किया करते थे। और पिता आदि लोग यह भी कहा करते थे कि पार्थिव-पूजन अर्थात् मट्टी का लिंग बनाके तूं पूजा कर। और माता मने किया करती थी कि यह प्रातःकाल भोजन कर लेता है, इससे पूजा नहीं हो सकेगी। पिता जी हठ किया करते थे कि पूजा अवश्य करन चाहिए क्योंकि कुल की रीति है। तथा कुछ २ व्याकरण का विषय और वेदों का पाठ मात्र भी मुझको पढ़ाया करते थे। पिता जी अपने साथ मुझको जहाँ-तहाँ मन्दिर और मेल-मिलापों में ले जाया करते और यह भी कहा करते थे कि शिव की उपासना सबसे श्रेष्ठ है। इस प्रकार १४ चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था। और शब्दरूपावली आदि छोटे २ व्याकरण के ग्रन्थ भी पूरे हो गए थे। पिता जी जहाँ २ शिव-पुराण आदि की कथा होती थी वहाँ २ मुझको पास बैठा कर सुनाया करते थे। और घर में भिक्षा की जीविका नहीं थी किन्तु जिमीदारी और लेन-देन से जीविका के प्रबन्ध करके सब काम चलाते थे। और मेरे पिता ने माता के मने करने पर भी पार्थिव पूजन का आरम्भ करा दिया था।

मुझको बचपन में रुद्र (=रुद्राध्याय) आदि सिखाकर (=कण्ठस्थ कराकर) शुक्ल यजुर्वेद पढ़ाना आरम्भ किया। मेरे पिता ने शिवार्चन करने में लगा दिया। दश वर्ष (की अवस्था) से मैं पार्थिव पूजन करने लगा।

अष्टम वर्ष की आयु में मेरे यज्ञोपवीत संस्कार का प्रबन्ध हुआ था। इसके उपलक्ष्य में एक सौ वेदज्ञ औदीच्य ब्राह्मण निमन्त्रित हुए थे। इन लोगों ने एक दिन पहले ही आकर प्रारम्भिक यज्ञ और वेद-पाठ आरम्भ कर दिया था। मेरे पिताजी ने मेरे लिये सोने का तीन तार वाला यज्ञोपवीत बनवाया था। प्रत्येक ब्राह्मण को भोजन के बाद एक-एक वस्त्र, लोटा और दस-दस रुपये दक्षिणा दी गयी थी। यज्ञोपवीत संस्कार के बाद मुझको १० दिन के लिये घर में बन्द रहना पड़ा था। ये १० दिन गायत्री मन्त्र के जप में और सन्ध्योपासना में ही बीत गए। १० दिन के बाद यज्ञोपवीत धारण करके जब मैं बाहर निकला, तब मेरी झोली में कुछ न कुछ भिक्षास्वरूप अबने दिया था। बड़ौदा और पूना के दो राजकर्मचारी पिता जी के बन्धुओं के रूप में इस यज्ञोपवीत-संस्कार में उपस्थित हुए थे। इन दोनों ने और पिता जी ने मेरी झोली में कई एक मुहरें डाली थीं और माता जी ने फल और कच्चे चावल डाले थे। यज्ञोपवीत-संस्कार के पश्चात् प्रतिदिन मैं तीन बार संध्योपासना करता था और गायत्री मन्त्र का जप भी करता था। पिता जी ने स्वयं मुझको रुद्राध्याय को शिक्षा दी थी और समग्र शुक्ल यजुर्वेद और शेष तीनों वेदों के चुने हुए अंशों को कण्ठस्थ कर लिया था। इसके बाद पिता जी ने शिवपूजा की नियम-विधि-व्यवस्था की शिक्षा दी थी। शिव पूजा के लिये भिन्न-भिन्न उपासना, व्रतधारण और उपवासादि की भी शिक्षा दी थी। अब मैंने स्वयं शिवपूजन करना शुरु कर दिया था।

पृष्ठ ८ का शेष ..

हुई। हमारे सेवाकाल में अनेक लोग हमारे सम्पर्क में आये। हमने देखा कि धर्म व वेदादि विषयों में उनका ज्ञान प्रायः शून्य होता है। सद् ग्रन्थों व सत्पुरुषों के संग का जो भी मनुष्य सेवन करेगा, वह अवश्य ही लाभान्वित होगा, उसकी लोभ की प्रवृत्ति पर भी अवश्य अंकुश लगेगा और वह अशुभ कर्मों से बच सकेगा।

लोभ तो अवनति व पतन की ओर धकेलता ही है, इसके अतिरिक्त काम, क्रोध व मोह से भी मनुष्य का पतन होता है। हमें इन शत्रुओं को पहचानना चाहिये और इनसे मित्रता न कर शत्रुता ही करनी चाहये। यदि मित्रता करेंगे तो वर्तमान नहीं तो भविष्य में हानि अवश्य उठानी होगी। अतः इन व अन्य सभी शत्रुओं से बचने के लिए आर्यसमाज की शरण में जाकर हमें सत्यार्थ प्रकाश सहित ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थों व इसके साथ वेद, दर्शन, उपनिषदों व समस्त वैदिक वांग्मय का अध्ययन करना चाहिये। विज्ञान ने आजकर यह सभी पुस्तकें हिन्दी भाषा में पुस्तक रूप में व इंटरनैट पर भी उपलब्ध करा दी हैं जिनका अध्ययन कर हम शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इन ग्रन्थों की उपलब्धि व ज्ञान महर्षि दयानन्द से पूर्व देशवासियों को सुलभ नहीं था। **वेद का आदेश है कि मनुष्य को मनुष्य बनने का प्रयास करना चाहिये 'मनुर्भव'**। मनुष्य शुभ गुणों से युक्त मनुष्यों को ही कहते हैं। अशुभ गुणों वाले मनुष्य होकर भी मनुष्य नहीं कहे जा सकते। जिस प्रकार किसी पात्र में एक छिद्र हो जाये तो उसमें रखा जल सुरक्षित नहीं रहता, उसी प्रकार से यदि मनुष्य के जीवन में एक बुराई आ जाये तो वह जीवन मनुष्य जीवन न होकर पापयुक्त जीवन हो जाता है। अतः मनुष्य को पाप व अधर्म में प्रवृत्त करने वाले शत्रुओं लोभ, काम, क्रोध व मोह को जानकर इनसे अपनी रक्षा हेतु शुभ संकल्पों को धारण करना चाहिये। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

www.thearyasamaj.org

'वेदों की रक्षा और आर्य समाज'

-मनमोहन कुमार आर्य

वेदर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने अपने अपूर्व पुरुषार्थ और वैदिक ज्ञान से वेदों का पुनरुद्धार किया था । वह सारे संसार को आर्य व वेदानुयायी बनाना चाहते थे परन्तु संसार के लोग उनकी जनहितकारी व लोक कल्याण की भावना को समझ नहीं पाये और उनसे असहयोग करते रहे । ऐसे ही लोगों ने षडयन्त्र रचे और महर्षि दयानन्द का जीवन विष देकर समाप्त कर दिया । **महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक घोषित किया है और कहा है कि वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सब आर्यों, वेद और ऋषि दयानन्द के अनुयायियों का परम धर्म है** । आज आर्य समाज द्वारा वेदों के प्रचार प्रसार की क्या स्थिति है ? हमें लगता है कि आज आर्य समाज पहले की अपेक्षा सक्रिय कम निष्क्रिय अधिक हुआ है । **स्वामी अमर स्वामी जी ने एक बार कहा था कि पहले के आर्य समाज के मन्दिर कच्चे होते थे परन्तु आर्य समाजी बड़े पक्के होते थे । अब आर्य समाज के भवन तो पक्के बन गये हैं परन्तु आर्य समाजी कच्चे हो गये हैं** । इस बात में हमें काफी सीमा तक सत्य दिखाई देता है । आज आर्य समाज के परिवारों के बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं । रात दिन पढ़ाई करनी होती है । शिक्षा पूरी करने के बाद अदिकांश लोग सरकारी व अपने अपने व्यवसाय में लग जाते हैं और पश्चिमी विचारों, आचार विचार, रहन सहन व जीवन पद्धति को अपना लेते हैं व अपना रहे हैं । माता-पिता का उन पर वश नहीं होता । वह सब अपनी मर्जी के मालिक होते हैं । इससे लगता है कि वह व उनकी भावी पीढ़ियां पश्चिमी विचारों की पोषक ही बनेंगी और आर्य समाज के सन्ध्या, यज्ञ आदि पंचमहायज्ञों से ही वह दूर नहीं जायेंगी अपितु सत्यार्थप्रकाश और वेद से भी दूर हो जायेगीं ।

दूसरी ओर हमारे गुरुकुल हैं । गुरुकुलों में भी हम देखते हैं कि लोग किन्हीं कारणों से गुरुकुल में पढ़ते हैं और फिर डिग्रियां लेकर महाविद्यालयों में अध्यापन आदि विषयक सरकारी व अच्छे वेतन की नौकरी की तलाश करते हैं । नौकरी व इच्छित रोजगार मिल जाने पर वह अपने व्यवसाय व गृहस्थ जीवन में लिप्त हो जाते हैं । आर्य समाज का काम उनसे नहीं हो पाता । यहां यह बता दें कि आर्य समाज में डॉ. धर्मवीर जी, डॉ. रघुवीर जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. महेश विद्यालंकार आदि गुरुकुलों के ही स्नातक थे । आपने शिक्षा जगत में अच्छा कार्य किया और साथ ही आर्य समाज को भी पर्याप्त समय व सेवायें दी जिन पर प्रत्येक आर्यसमाजी को गर्व है । गुरुकुल के जिन स्नातकों को अच्छा रोजगार नहीं मिलतावह कुछ लोग आर्य समाजों में पुरोहित बन जाते हैं । विद्वान पुरोहितों का भी आर्य समाज के अधिकारी कई प्रकार से शोषण करते हैं । वेतन उन्हें नाम मात्र ही मिलता है । उनकी आवश्यकतायें अधिक होती हैं । अतः वह भी पूरे मन से आर्य समाज का प्रचार नहीं कर पाते । हमें यदा कदा दक्षिणा को लेकर कुछ पुरोहितों की शिकायतें भी सुनने को मिलती हैं । एक पुरोहित जी ने एक बार हमारे मित्र के पुत्र का विवाह संस्कार कराया । उन्होंने उन्हें अपनी इच्छानुसार दक्षिणा दी । पुरोहित जी हमसे पूछने लगे कि बैण्ड, आरकेस्ट्रा और अन्य अन्य को क्या दक्षिणा दी गई । क्या उन्होंने विवाह कराया ? हमें उनसे कम दक्षिणा क्यों दी गई ? उसके वाद वह वर के पिता के पास गये और उन्हें कुछ कहा । हमने देखा कि वर के पिता ने अपना बटुआ खोला और कुछ दक्षिणा और लेकर पुरोहित जी विदा हो गये । हम यहां पुरोहित जी को दोष नहीं दे रहे हैं परन्तु अनेक स्थितियों में पुरोहितों को उचित दक्षिणा नहीं मिलती । इसके हमारे सामने अनेक उदाहरण हैं । होना तो यह चाहिये कि गुरुकुलों के सभी स्नातक युवक आर्य समाज के प्रचारक बनते परन्तु ऐसा हो नहीं पा रहा है । आर्य समाज के अधिकारी भी गुरुकुलों के स्नातकों की सेवायें लेने के लिए उत्सुक नहीं दिखाई देते । अतः स्नातकों को अपनी आजीविका व गृहस्थ जीवन के लिए उपाय तो करने ही होते हैं ।

आजकल देश में आतंकवाद का खतरा भी निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हो रहा है । हम केवल अपने सैनिकों के बल पर ही अपने घर में सुख की श्वांस ले रहे हैं । हमारी स्थिति **'सुरक्षा हटी दुर्घटना घटी'** वाली है । भविष्य में क्या होगा, यह कोई नहीं जानता परन्तु जिस प्रकार से आतंकवादी हिंसा बढ़ रही और उनका जो उद्देश्य है उससे वैदिक धर्मी और वेद तो असुरक्षित होंगे ही । अभी घुलागढ़ व मालदा आदि में जो हुआ वह भी देखने व सुनने को मिला है । इतिहास में मीनाक्षीपुरम् और केरल के मोपला विद्रोह की घटनायें भी आर्यों को स्मरण हैं । यह सब हमारे लिए खतरे की घंटी हैं । पहले वेद विलुप्त हो गये थे तो महर्षि दयानन्द ने उनका पुनरुद्धार किया । ऋषि के अनुयायियों की पहली व उसके वाद की कुछ पीढ़ियों व विद्वानों ने वेदों को सुरक्षित करने का सफल प्रयास किया । आज तो वेदों की स्थिति यह है कि मन्त्र संहितायें तो प्राय' छपती ही नहीं है । वेद भाष्य जो प्रकाशित होते हैं वह भी पांच सौ या एक हजार की संख्या में प्रकाशित होते हैं और वह भी दशकों तक बिकते नहीं हैं । इससे अनुमान लगा सकते हैं कि कितना वेद प्रचार हो रहा है और वेद कितने सुरक्षित हैं । जहां तक पौराणिक सनातनी बन्धुओं की बात है उन्होंने वेदों का अध्ययन और यहां तक कि वेदों का नाम लेना भी छोड़ ही रखा है । वह रामचरित मानस, गीता या पुराणों तक ही सीमित हैं । आज जितने धर्मगुरु टीवी आदि पर दिखाई देते हैं, वह भी पुराणों की कथा करके ही अपना इष्ट सिद्ध करते हैं । अतः वेदों की रक्षा पर गम्भीर विचार की आवश्यकता है । क्या आज वेद सुरक्षित हैं और भविष्य में भी रहेंगे ? यह विलुप्त नहीं होंगे, क्या ऐसा मान सकते हैं । हमें इसका उत्तर यही मिलता है कि शायद कोई चमत्कार हो जाये, कोई ऋषि दयानन्द के समान ऋषि आ जाये तो सुधार हो सकता है अन्यथा अब संसार तो नास्तिकता की ओर ही बढ़ रहा है । संसार में आस्तिकों की संख्या निरन्तर घटती ही जा रही है । आर्य समाज में भी आज स्वाध्याय की प्रवृति काफी घटी है । सन्ध्या व हवन की ओर भी आर्यों का उतना ध्यान नहीं है जितना होना चाहिये । देश की बहुत कम आर्य

www.thearyasamaj.org

समाजों में दो समय का दैनिक यज्ञ होता होगा ? अतः वेदों की रक्षा पर विद्वानों द्वारा विचार किया जाना आवश्यक एवं समीचीन प्रतीत होता है ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांगड़ी में जो गुरुकुल खोला था वह भी अब पूर्णतः आर्य समाज के नियंत्रण में न होकर एक सरकारी यूनिवर्सिटी बन गया है । अब वहां अन्य अन्य विषयों का अधिक अध्ययन होता है जिसका आर्य समाज के प्रचार व प्रसार से कोई लेना देना नहीं है । वहां गुरुकुल से कितने स्नातक बनते हैं और उनमें से कोई आर्य समाज का प्रचारक बनता है या नहीं, इसकी कोई जानकारी नहीं है । अनुमान यही है कि गुरुकुल कांगड़ी से आर्ष शिक्षा प्रणाली के स्नातक नहीं निकलते । यदि निकलते हों तो शायद् किसी को कोई ज्ञान नहीं है । ऐसी ही स्थिति कम व अधिक सभी गुरुकुलों की हो सकती है । हमने कैप्टेन देवरत्न आर्य जी के पिता आचार्य भद्रसेन जी के जीवन में पढ़ा है कि उन्होंने जानबूझकर शिक्षा की सरकारी डिग्रीयां इस लिए प्राप्त नहीं की थीं कि उनमें मन में सरकारी नौकरी का लालच न आ जाये जबकि वह अपनी योग्यता से वेदों पर अनुसंधान व शोध करने वालों को भी परामर्श देते थे । हमने अनुभव किया कि उनका जीवन भी अभावों की भट्टी में होकर गुजरा था । सौभाग्य से उन्हें देवरत्न आर्य जैसे योग्य व श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त हुए थे जिन्होंने अपने माता-पिता की सेवा के साथ अपने सभी भाई-बहिनों से अच्छे व मधुर सम्बन्ध बनाये और आर्य समाज की भी उल्लेखनीय सेवा की । आज आर्य समाज को ऐसे गुरुकुलों की आवश्यकता है जहां ब्रह्मचारियों को डिग्रियां न देकर वैदिक धर्म का प्रचारक बनाया जाये जैसा कि रोजड़ आदि गुरुकुलों में होता है । इसके लिए स्वामी स्तयपति जी सहित उनके शिष्य ज्ञानेश्वर जी व स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी आदि बधाई के पात्र हैं ।

वेदों की रक्षा कैसे की जा सकती है ? इसका समुचित समाधान हमें मिल नहीं रहा है । हम आर्य समाज के बड़े विद्वानों व संन्यासियों को इसका उत्तर तलाश करने की अपील करते हैं । वह अपने अनुभवों से आर्यजगत का मार्ग दर्शन करें, यह हमारी प्रार्थना है । इसी के साथ लेख को विराम देते हैं । ओ३म् शम् ।

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के लिए गठित की गई समितियों की सूचि

स्वागत समिति सम्मेलन

१. श्री विट्ठलराव आर्य जी, अध्यक्ष
२. श्री हरिकिशनजी वेदालंकार, आयोजक
३. श्री डॉ. टी.वी. नारायण जी, बोलारम
४. श्री ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी, धूलपेट
५. श्री दत्तात्रेय कल्याणी जी, नारायणपेट
६. श्री प्रदीप गुप्ता जी, बोधन
७. श्री एम. वेणुगोपाल जी, जड़चर्ला
८. श्री के.वी. रेड्डी जी, जड़चर्ला
९. श्री एम. पण्ढरी जी, आर.पी.रोड़
१०. श्री करिपे सूयप्रकाश जी, निज़ामाबाद
११. श्री मुनगाला वेदप्रकाश जी
१२. श्री कोडिप्याका चन्द्रशेखर जी
१३. श्री धर्मपाल जी नगरी, धूलपेट
१४. श्री आर. रामचन्द्र कुमार जी,उम्दा बाज़ार
१५. श्री वाचसपति रेड्डी जी, उम्दा बाज़ार
१६. श्रीमती जयलक्ष्मी देवीजी, सुल्तान बाजार
१७. श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव, दयालबौली
१८. श्री आर. कृष्णमूर्तिजी, Adv.
१९. श्री वेंकटरघुरामुलू जी, Adv.
२०. श्री क्रान्तिकुमार कोरटकर जी
२१. श्री एस. सत्यनारायण रेड्डी जी Adv.
२२. श्री एन. अशोक कुमार जी, Adv.
२३. श्री पी. रुद्रप्रताप जी, सुल्तानबाजार
२४. श्री भक्तराम जी, सुल्तानबाजार
२५. श्री ए. देवीदास जी, चादरघाट
२६. श्री के. जयप्रकाशराम जी, मलकपेट
२७. डॉ. रमेशचन्द्र जी भटनागर,आगापुरा
२८. श्री राजेन्द्र जी गोजे, बांसवाड़ा
२९. श्री नागभूषणम जी, बांसवाड़ा
३०. श्री डी. गोपालजी, मादन्नापेट
३१. श्री रघुनन्दन जी, अशोकबजार
३२. श्री सी. वालरेड्डी जी, गुडिमलकापूर
३३. श्री ब्रह्मचारी मुरली जी, कवाड़ीगुडा
३४. श्री गडीला आंजनेयुलू जी, कवाड़ीगुडा
३५. श्री अमर सिंह जी आर्य, लक्ष्मीनगर
३६. श्री बी. विजय कुमार जी, कुर्मागुड़ा
३७. श्री एम. जयव्रत जी, गोशामहल
३८. श्री वैद्यनाथ जी, याकतपुरा
३९. श्री ध्येयपाल कृष्ण जी, ईदिबाजार
४०. श्री श्रीधरप्रसाद जी सक्सेना,चंद्रिकापुर
४१. श्री गोविन्द प्रसादजी उपाध्याय,किशनगंज
४२. श्री अनन्तय्या जी, राजमोहल्ला
४३. श्री धर्मवीर जी (ईंजिनीयर) कोत्तापेट
४४. श्री भुसानी सत्यनारायण जी, निर्मल
४५. श्री जे. गोपाल रेड्डी जी, नलगोण्डा
४६. श्री पी. जगनमोहन जी, नलगोण्डा
४७. श्री मामिडी श्रीनिवास जी,आर.पी.रोड़
४८. श्री दयानन्द गौरि जी, ए.ओ.सी.गेट
४९. श्री एस.एस. अप्पाराव जी,विशाखापट्टणम
५०. श्री डी. वेंकटनरसय्या जी, निज़ामाबाद
५१. श्री एन. वेंकटेशम् जी, आर.पी.रोड़
५२. श्री बाशेट्टी सत्तय्या जी, आर.पी.रोड़
५३. श्री ए. रामचन्द्र जी आर्य, जहीराबाद
५४. श्री गुरुनारायण जी, बांसवाड़ा
५५. श्री जी. वेंकट रेड्डी जी, बोधन
५६. श्री माशेट्टी श्रीनिवास जी, आर.पी.रोड़
५७. श्री शंकरराव जी पाटिल, बोधन
५८. श्री पी. सत्यनारायण जी, लालागुडा
५९. श्री बी. बृहस्पति जी, बोईनपल्ली
६०. श्री पुल्लूरी मल्लेशम्, लालागुडा
६१. श्री मुनगाला धीरेन्द्र जी इब्रहिमपट्टणम
६२. श्री सुगाला अशोक जी
६३. श्री सुनील जी मलकपेट
६४. श्री गोविन्द सिंह जी, धूलपेट
६५. श्री के.पी. रामबाबू जी, मेडीबावी
६६. श्री बलराम जी गौड़, बीचकुंदा
६७. श्री बाबू शट्टी जी, पुलकल
६८. श्री बी. वीरेन्द्र कुमार जी, सैदाबाद
६९. श्री अन्नादयानंद जी, एल्लारेड्डी
७०. श्री एम. नारायण जी, पिट्लम्
७१. श्री कंकनाल किशन जी, कामारेड्डी
७२. श्री जक्कम रामचंद्र जी, मोर्ताड़
७३. श्री एन. नरसा रेड्डी जी, अंकापूर
७४. श्री बी. बद्रय्या जी, वेन्नाचेड़
७५. श्री शिवप्रकाश जी, ताण्डूर
७६. श्री एस. रामरेड्डी जी, अंगड़चिट्टम्पल्ली
७७. श्री पी. विट्ठलराव जी, आगापुरा
७८. श्री रामरेड्डी जी (पूर्व सरपंच)घटकेश्वर
७९. श्री पसुपर्ति वेणुमाधव जी, पेद्दापल्ली
८०. श्री वी. दानवीर गुप्ता जी, मंचिरियाल
८१. श्री ठाकुर राय जी, ईसगाँव
८२. श्री सत्यदेव जी, गज्चेल
८३. श्री पी. संगमेश्वर जी, रामायणपेट
८४. श्री सीलम् वेंकटस्वामी जी, हसनपर्ती
८५. श्री नारायण प्रकाश जी लोया, महबूबाबाद
८६. श्री के. लक्ष्मीनारायण जी, महबूबाबाद
८७. श्री देवरकोण्डा दत्तात्रेय जी, परकाल

www.thearyasamaj.org

८८. श्री टी. युगेन्धर जी, नरसम्पेट
८९. श्री एस. राज़ाराम जी, वरंगल
९०. श्री यामा जनार्धन जी, सूर्यापेट
९१. श्री के. विश्वनाथम् जी, हुजूरनगर
९२. श्री संकोच लक्ष्मीनारायण जी, चौदरगुड़ा
९३. श्री बी. शिवकुमार जी, जड़चर्ला
९४. श्री डॉ. मुरलीधर राव जी, महबूबनगर
९५. श्री डॉ.सी.एच. चन्द्रय्या जी, महबूबनगर
९६. श्री के. वीरास्वामी जी, अमिस्तापुर
९७. श्री के. स्वामी जी, मक्तल
९८. श्री शिवपाल सुलाके जी, उटकूर
९९. श्री कनकप्पा जी, उटकूर
१००. श्री के. प्रकाशवीर जी, जाजापूर
१०१. श्री कुनगिरि वीरन्ना जी, नारायणपेट
१०२. श्री अरगे नरसिमुलू, कोडंगल
१०३. श्री डॉ. गोपीकिशन जी, कोडंगल
१०४. श्री एम. वेंकट रेड्डी जी, वत्तुगुंडला
१०५. श्री एस. वेंकट रामा रेड्डी जी,नारायणपेट
१०६. श्री पी. श्रीनिवास जी, गद्वाल
१०७. श्री नागेश्वर रेड्डी जी, गद्वाल
१०८. श्री मोगल सुभान जी आर्य, नर्सरावपेट
१०९. श्री चलवादी सोमय्या जी, गुन्टूर
११०. श्री प्रदीपदत्त जी
१११. श्री धर्मपाल जी, (चपल बाज़ार)
११२. श्री द्वीजेन्द्र रड्डी जी,
११३. श्री किशन गोपाल जी गिल्डा

यज्ञ समिति :-

१. श्री पं. प्रियदत्त शास्त्री जी
२. सुश्री निर्मला योग भारती जी
३. श्री अरविन्द शास्त्री जी
४. श्री केशवनारायण जी
५. श्री विद्यानन्द जी
६. श्री मसन चेन्नप्पा जी
७. श्रीमती नीरजा जी
८. श्रीमती ज्योतिश्री जी
९. श्रीमती मैत्रेयी जी
१०. श्रीमती सविता जी
११. श्रीमती सुनीति जी
१२. श्रीमती वसुधा शास्त्री जी
१३. श्री वेदसिन्धु जी
१४. श्री श्यामप्रसाद जी
१५. श्री गणेश देव जी
१६. श्री सुरेशचन्द्र जी
१७. श्री भवभूति जी
१८. श्री वेदश्रवा जी
१९. डॉ. यशस्वी जी
२०. श्रीमती सुमेधा जी
२१. सैदाबाद - बालिकाएँ
२२. गोशामहल - महिला समिति

भोजन समिति :-

१. श्री बसिरेड्डी जी
२. श्री मल्लिकार्जुन जी
३. श्री कृष्णभगवान जी
४. श्री वेंकटराम रेड्डी जी
५. श्री जी. माणिक प्रभु जी एवं
६. श्री एम. गोपाल जी

जल व्यवस्था और पुलिस बन्दोबस्त समितिः-

१. श्री अर्जुन कुमार जायसवाल जी
२. श्री विजयेन्द्र जी

कार्यालय समिति :-

१. श्री भद्रय्या जी
२. श्री गोपाल जी (महबूबनगर)
३. श्री श्रीनिवास जी (कार्यालय)
४. श्री दत्तप्पु सुधाकर जी (कार्यालय)
५. श्री अमर कुमार जी (कार्यालय)

आवास व्यवस्था और डेकोरेशन समिति

१. श्री सुधाकर पवार जी & Team
२. श्री राजेश सरोदे जी
३. श्री रघु जी
४. श्री कामेश जी
५. श्री विश्वजीत जी

अतिथि भोजन व्यवस्था और प्रिण्ट मटेरियल समिति

१. श्री विजयेन्द्र जी
२. श्री सुदर्शन जी
३. श्री नर्सिसिंहा रेड्डी जी
४. श्री गोपाल जी नारायण पेट
५. श्री के. नारायण जी
६. श्री ब्रह्मानन्दा रेड्डी जी
७. श्री हरि (रामचन्द्रकुमार) जी

मीडिया समितिः-

१. श्री पी. सत्यनारायण जी

भोजन व्यवस्था समितिः-

नारायण पेठ, मक्तल, महबूबनगर, जड़्चर्ला, गद्वाल दयानन्द विद्यालय

मेडिकल टीम समितिः-

१. डॉ. श्री किरण जी गोजे
२. डॉ. श्री मुरलिधर राव जी
३. डॉ. श्री भारद्वाज जी
४. डॉ. श्रीमती सुलोचना जी
५. डॉ. श्रीमती सुनीता जी
६. डॉ. श्री प्रवीण कुमार जी
७. डॉ. श्री प्रशान्ति जी

विशेष अतिथि व्यवस्था :-

१. डॉ. श्री रवीन्दर गोजे जी
२. श्री सत्यव्रत जी
३. श्री कृष्णदेव जी
४. श्री धर्मवीर जी
५. श्री वेदालोक जी

प्रचार समिति :-

१. श्री गुरुनारायण जी
२. श्री रामचन्द्रकुमार जी
३. श्री दिनेश सिंह जी
४. श्री विश्वश्रवा जी
५. श्री विश्वेन्द्र जी

धन संग्रह समिति :-

१. श्री कोत्तुर जयप्रकाशराम
२. श्री हरिकिशन जी वेदालंकार
३. श्री म्याडम सुधाकर गुप्ता
४. श्री लक्ष्मण सिंह जी
५. श्री धर्मपाल नगरी
६. श्री अशोक कुमार जी श्रीवास्तव
७. श्री माशट्टी श्रीनिवास जी
८. श्री मामिडि श्रीनिवास जी
९. श्री गुरुनारायण जी
१०. श्री सत्ति रेड्डी जी

पण्डाल समिति :-

१. श्री रामचन्द्र राजु जी
२. श्री सोमनाथ जी
३. श्री वैद्यनाथ जी
४. श्री अरविन्द जी

प्रबन्ध एवं अनुशासन समिति :-

१. श्री राचुरी अशोक जी
२. श्री दडिगे गोपाल जी
३. श्री राजेश्वर जी
४. श्री श्रद्धानन्द जी (शालीबण्डा)
५. श्री श्रद्धानन्द जी (बाबूराव जी)
६. श्री कोटी धर्मतेज जी
७. श्री विश्वम्भर जी
८. श्री रविकिरण जी
९. श्री आई.के. स्वामी जी
१०. श्री एम. अशोक जी (सैदाबाद)
११. श्री नीलेश दूबे जी
१२. श्री विजयपाल जी (चप्पलबज़ार)
१३. श्री रमेश कल्याणी जी

www.thearyasamaj.org

हैदराबाद (तेलंगाना) में राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत सम्मेलन

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त विकल बिखरे हैं हो निरुपाय समन्वय उनका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाय

देश की आजादी के बाद से आज तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रांतीय सभाओं और आर्य समाजों की अंतरंग सभाओं एवं वार्षिकोत्सवों ने निरंतर आर्य समाज के उत्थान, उत्कर्ष, प्रचार-प्रसार पर गहन मंथन अविरल रूप से होता आ रहा है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की गत अंतरंग सभा की बैठक में भी यही चर्चा रही कि आर्य समाज का उत्थान कैसे हो, आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कैसे किया जाए, आर्य समाज को सशक्त कैसे बनाया जए आदि । बैठक में अनेक पुरोहितों और विद्वानों ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर विचार व्यक्त करते हुए निराशा व्यक्त की और परामर्श दिया कि यदि हमने कोई क्रांतिकारी कार्यक्रम हाथ में नही लिया तो आर्य समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा ।

मैंने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा-

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, नो चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः

यदि अब हम जाग गये तो ठीक है, अन्यथा विनाश ही विनाश है ।

आर्य समाज के गौरवमय पुत्र, आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्रप्रदेश-तेलंगाना एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने घोषणा की कि आर्य समाज के भविष्य को उज्जवल एवं क्रांतिकारी वनाने के लिए आर्य जगत के विद्वानों के सम्मेलन के लिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ और यह सम्मेलन हैदराबाद में आयोजित किया जाए । विद्वानों के आने-जाने एवं आवास तथा भोजन का व्यय आर्य प्रतिनिधि सभा आंप्र. व तेलंगाना वहन करेगा । उनका प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ और हैदराबाद में सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया ।

दयानन्द के निष्ठावान अनुयायियों का आर्य समाज की वर्तमान शोचनीय स्थिति देखकर चिंतित होना स्वाभाविक है । आर्य समाज की प्रारंभिक अवस्था में विश्व को यह विश्वास होने लगा था कि आर्य समाज की चिंगारी एक दिन ज्वालामुखी बनेगी और इस ज्वाला में जातिवाद, क्षेत्रीयता, भाषावाद, अस्पृश्यता, आर्थिक एवं सामाजिक विषमता, स्त्रियों एवं दलितों पर अत्याचार समाप्त होगा । विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होगी । पाखण्ड, अंधविश्वास का समूल उन्मूलन होगा ।

अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक एंड्रो जेक्सन डेविस के उद्‌गार हम अनेक बार सुन चुके हैं ।

'मुझे एक अग्नि दिखाई देती है जो सार्वभौम है अर्थात् वह असीमित प्रेम की अग्नि, जो घृणा को जलाने वाली है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर साफ कर रही है । इस असीमित अग्नि को देखकर जो निश्चित रूप से राज्यों, राज्यसत्ता और संसार भर की राजनीतिक बुराईयों को पिघला डालेगी, मैं अत्यन्त अनान्दित होकर एक उत्तेजित उत्साह का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ । असीमित उन्नति की विद्युत से मानवी चित्त हिल रहा है, आज उसकी केवल चिन्गारियां आकाश की ओर उड़ती हैं । व्याख्यान दाताओं, कवियों और लेखकों की शिक्षाओं में इधर-उधर ज्वालाएं दिखाई देती हैं । यह अग्नि सनातन आर्य धर्म को वास्तविक पवित्र दशा में लाने के लिए एक भट्टी में थी जिसे आर्य समाज कहते हैं । यह अग्नि भारतवर्ष के परम योगी दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रकाशमान हुई थी । हिन्दू और मुसलमान इस संसार को भस्म करने वाली अग्नि को बुझाने के लिए चारों ओर शीघ्रता से दौड़े परंतु यह अग्नि ऐसे वेग से बढ़ती गई कि इस वेग का इसके संस्थापक दयानन्द को ध्यान भी न था और ईसाईयों ने भी एशिया के इस नये प्रकास को बुझाने के लिए हिन्दू और मुसलमान का साथ दिया परंतु यह आकाशीय अग्नि और भी भड़क उठी और फैल गई । मैं इस अग्नि की दिशा को बधाई देता हूँ । जब यह अग्नि सुंदर पृथिवी को नवजीवन प्रदान करेगी तो सार्वभौम सुख, समृद्धि और आनन्द का युग आरंभ होगा ।'

जब हम एंड्रो जेक्सन डेविस के ये उद्‌गार पढ़ते हैं तो हमारा सिर शर्म से झुक जाता है । यह आकाशचुंभी अग्नि बुझ गई है और इसके स्फुलिंग यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं । ऐसा ही एक सुफुलिंग विट्ठलराव है जो आर्य समाज के विद्युत्कणों को एकत्रित कर पुनः ज्वालामुखी के निर्माण का स्वप्न ले रहा है ।

हैदराबाद में प्रस्तावित सम्मेलन कोई संयोग नहीं है अपितु विधाता का अदृश्य वरदान प्रतीत होता है । हैदराबाद की धरती आर्य जगत की दृष्टि से त्याग, बलिदान, समर्पण और अन्याय के विरुद्ध अनवरत संघर्ष और ताकतवर के सामने न झुकने की प्रेरणा देनी वाली धरा है । श्री विट्ठलराव ने हैदराबाद की धरा पर शायद इसीलिए आर्य जगत के विद्वानों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया है ताकि वे इस धरा से यह प्रेरणा ले सकें कि असंभव शब्द केवल शब्दकोष में ही होता है । आर्यो की डिक्शनरी में विश्व के समस्त शब्द हैं परंतु एक शब्द इम्पोसिबल (Impossible) नहीं है ।

हैदराबाद की धरती के नीचे आर्यो का गर्म लहू आज भी सिंहगर्जना कर रहा है कि आर्यो ! ये वही धरा है जहां तुमने विश्व की सर्वाधिक शक्तिशाली मुस्लिम ताकत को चुनौती दी थी और सारा संसार विस्फारित नयनों से इस युद्ध को देख रहा था । कहां मुट्ठी भर दयानन्द के अनुयायी जिनके वक्षस्थल में अक्षय ऊर्जा थी और दूसरी तरफ निजाम की असीम पाशविक शक्ति । युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान श्री घनश्याम सिंह गुप्त जब शिमला में इस सत्यागरह के बारे में ३०.७.३९ को ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि सर बट्रेण्ड ग्लेनस से मिले थे तो उसने श्री गुप्त को कहा था -

'आप विश्व के सबसे बड़े मुस्लिम राज्य के साथ लड़ रहे हैं । आप इसमें किस प्रकार सफलता की आशा कर सकते हैं ?' आर्य समाज ने धार्मिक अधिकारों के लिए निजाम जैसी कट्टर मुस्लिम शासन सत्ता से लोहा

www.thearyasamaj.org

लिया । १० हजार से अधिक व्यक्तियों को सत्याग्रह में जेल में भेजकर एक नवीन कीर्तिमान स्थापित किया इससे पहले वर्तमान भारत में इतने बड़े पैमाने पर धार्मिक अधिकारों के लिए कोई संघर्ष नहीं किया गया था ।

श्री विट्ठलराव सोचते होंगे कि शायद हैदराबाद की धरती पर दयानन्द के अनुयायी आकर उस युद्ध को स्मरण करें और कट्टरवादी, साम्प्रदायिक ताकतों को मिट्टी में जिंदा गाड़ने की प्रेरणा लें । विट्ठलराव शायद ये भी सोचते हों कि इस धरती पर आकर दयानन्द के अनुयायियों को उस छोटेलाल की याद आए जो अलालपुर गांव जिला मैनपुरी, उत्तरप्रदेश का निवासी था और हैदराबाद के धर्मयुद्ध मे शहीद हुआ था ।

सत्याग्रह समाप्त होने के बाद पं. धुरेन्द्र शास्त्री इनकी माता से मिलने गांव में गए । उन्हें देखकर जब माता रूदन करने लगी और पण्डित जी ने उन्हें धीरज बंधाया तो वह कहने लगी- मैं इसलिए नहीं रोती हूँ कि मेरा पुत्र धर्मयुद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ है । मैं इसलिए रो रही हूँ कि मेरा और कोई पुत्र नहीं है, यदि पुनः सत्याग्रह हुआ तब मैं अपना कौन सा पुत्र भेजूंगी ? यही मेरे रोने का कारण है । छोटेलाल का कोई भाई नहीं था परंतु उसकी वृद्धा मां का और बहन को घोर आर्थिक संकट से गुजरने के बाद भी यह गर्व था कि मेरा बेटा और मेरा भाई धर्म के लिए शहीद हो गया । इस बलिदान की भावना को याद कर हैदराबाद में २, ३ व ४ फरवरी को उपस्थित आर्यजन आत्ममंथन करें ।

आर्य समाजों की वर्तमान दशा

आर्य समाजों की वर्तमान दशा वास्तव में अत्यन्त चिंतनीय है । आर्य प्रतिनिधि सभाओं के चुनावों में अनेक मानचित्र आते हैं परंतु ६०-७० प्रतिशत आर्य समाजों के कोई भवन नहीं है । वहां दैनिक सत्संग या यज्ञ तो छोड़िए साप्ताहिक सत्संग भी नहीं होते । केवल कहीं-कहीं वार्षिकोत्सव होते हैं और वार्षिकोत्सव में उपस्थित जनता को ही सदस्य मान लिया जाता है और उनका चंदा भी कोई धनी व्यक्ति या सभा का अधिकारी दे देता है । जिन आर्य समाजों के भवन हैं, वहां की स्थिति भी अत्यन्त शोचनीय है । इन विशाल सभागारों में ५-१० वृद्ध पुरुष और महिलाएं आते हैं । कुछ नाममात्र की समाजे ऐसी हैं जहां ५०-१०० नर-नारी आते हैं परंतु उनकी संतान किसी भी स्थिति में आर्य समाज आने के लिए तैयार नहीं है । ऐसी बात नहीं है कि मां-बाप अपने बच्चों पर दबाव नहीं डालते परंतु वर्तमान पीढ़ी मां-बाप के नियंत्रण में नहीं है । विस्मय की बात तो यह है कि मां-बाप को भी इस बात का दुख नहीं है कि उनकी संतान आर्य समाज से नहीं जुड़ रही है ।

इस स्थिति के लिए सार्वदेशक सभा क्या कर सकती है । स्थानीय आर्य समाजों को सक्रिय एवं जीवित करने का कार्य तो स्थानीय लोग ही कर सकते हैं । आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर की गणना विश्व की श्रेष्ठ आर्य समाजों में होती है । यहां बड़े-बड़े सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं । पिछले ३०-४० वर्ष से आर्य समाज के तत्वावधान में राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं को लेकर और विशेष रूप से नशाबंदी और शराबबंदी को लेकर अनेक प्रदर्शन किये गये परंतु आर्य समाज के अधिकांश पदाधिकारियों एवं सदस्यों की संतान आर्य समाज नहीं आती । मुसलमान पाँच बार नमाज पढ़ता है । मुसलमान मंत्री, मुख्यमंत्री या राज्यपाल हो, नमाज के समय वह अल्लाह की इबादत करने चला जाता है । यही भाव हमारा यज्ञ के प्रति होना चाहिए था । हमने प्रयोग किया और प्रातः सांय यज्ञ में उपस्थित होने लगे । हमने आर्य समाज के पदाधिकारियों, सदस्यों के एवं उनके परिवार के सदस्यों के जन्मदिन, विवाहोत्सव, बुजुर्गों की पुण्यतिथि आयोजित करना शुरू किया और इन आयोजनों में परिवारों के सैकड़ों लोग आने लगे । इसी प्रकार के आयोजन यदि समस्त आर्य समाजें करने लगे तो उनकी प्राण प्रतिष्ठा हो सकती है ।

सार्वदेशिक सभा एवं प्रतिनिधि सभाओं का दायित्व

हैदराबाद में प्रस्तावित सम्मेलन के लिए ९ विचारणीय विषय लिये गये हैं जिसमें सर्वांगीण विकास की रूपरेखा तैयार की जा सकती है । सौभाग्य से आर्य समाज को चिंतक और भाषणकर्ता बहुत मिले हैं । अपने भाषणों से सारे ब्रह्माण्ड को मापने की उनमें अद्‌भुत शक्ति है । ये भाषण तो हम पिछले ६०-७० वर्षों से देते आ रहे हैं परंतु उसका प्रभाव क्या पड़ा । स्थितियां बद से बदतर होती चली गई । इसा निष्कर्ष यह है कि ज्ञान के साथ कर्म की आवश्यकता है । भाषण के साथ आचरण की जरूरत है । ईंट, पत्थर, चूना, लौहा, पानी से मकान नहीं बनता ये तो सब साधन हैं । मकान का एक नक्शा बनाना होता है और उस नक्शे के अनुसार भवन निर्माण की सामग्री का उपयोग होता है । किसी को नींव बनना पड़ेगा, किसी को दीवार, किसी को छत ।

संगठन के बिना कुछ भी नहीं होगा

हम यह चिंतन करें कि संगठन का कार्य क्या है और हमने संगठन के लिये किया क्या है । आर्य समाजों के नहीं है । इस कार्य के लिये अनेक विद्वान, उपदेशक और भजनोपदेशक हैं । इन उत्सवों में भी सभा के पदाधिकारी सार्वदेशिक सभा को सशक्त बनाने की दृष्टि से ही जाएं । आपने जिन विषयों पर सुझाव मांगे हैं उन पर बहुत सकते हैं । परंतु हमारा दृष्टिकोण व्यवहारिक होना चाहिए । आज जिस स्थिति में हम हैं उस स्थिति से हम आगे कैसे बढ़े । मैं अनेक बार सुझाव दे चुका हूँ कि संगठन के तीन सोपान हों । १०-१००-१००० । सार्वदेशिक सभा के ७ या १० शीर्षस्थ बलिदानी नेता हों जो सर्वस्व समर्पित करने के लिये तैयार हों । इन १० शीर्षस्थ नेताओं में संगठन के लिए एक-एक लाख रुपया एकत्रित करने एवं १०-१० सक्रिय कार्यकर्ताओं को जोड़ने की क्षमता हो । ये समर्पित १०० व्यक्ति १०-१० व्यक्तियों को जोड़कर १००० कार्यकर्ताओं का संगठन खड़ा करें । ये समर्पित कार्यकर्ता वचन दें कि हम एक आवाज पर जहां बुलाओ वहां एकत्रित होने के लिए तैयार हैं ।

प्रत्येक प्रांत में एक मास या दो मास में इन १०० स्तम्भों का सम्मेलन हो जिसमें प्रांतों की प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारी सम्मिलित हों ।

हमें प्रारंभ में आंदोलन के लिए दिल्ली को केन्द्र बनाना होगा । हमारा प्रयास यह हो कि दिल्ली एवं इसके आस पास के क्षेत्रों से १००० नर-नारी और युवक एकत्रित हों तथा राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर संसद पर प्रदर्शन और धरना हो मुद्दे अनेक हो सकते हैं । नशाबंदी, शराबबंदी, भ्रष्टाचार, लोकपाल विधेयक ।

www.thearyasamaj.org

अन्ना हजारे भ्रष्टाचार के खिलाफ लोकपाल विधेयक के मुद्दे को लेकर भारतवर्ष का महान नेता बन गया ।

यह सर्वविदित है कि योगक्षेमकारी स्वाधीनता के लिए जिन लोगों ने अपनी आहुति दी उनमें ८० प्रतिशत आर्य समाजी थे । आर्य समाज की जड़ों में क्रांति शिरोमणी पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद-ए-आजम भगतसिंह, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, शेर-ए-पंजाब लाला लाजपत राय, पं. लेखराम आदि हजारों नवयुवकों का खून है, इसीलिए आर्य समाज की पताका आज तक भी झुकने नहीं पाई है । हमारे देश के सांसद अरबपति और खरबपति हैं और फिर भी अपना वेतन बढ़ाने के लिए दिन-रात एक कर रहे हैं । सब देश को लूटने में लगे हैं । ठंड में ठिठुरते हुए, भूख से मरते हुए करोड़ों लोगों की किसी को कोई चिंता नहीं है । यदि हम सांसदों द्वारा स्वयं वेतन वृद्धि का विरोध करने के लिए संस्द पर प्रदर्शन करें तो देश की सारी जनता आपको अपने सिर पर बैठा लेगी । इसी प्रकार के प्रदर्शन प्रत्येक प्रांत की राजधानी में हो और स्थानीय प्रांतीय सभाएं उसमें सक्रिय सहयोग दें । आर्य समाज के जागरण के लिए हम प्रत्येक प्रांत में राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर जनजागरण यात्राएं निकालें तो हमारे साथ ऐसे १०० व्यक्ति जुड़ सकते हैं जो प्रतिवर्ष एक-एक लाख रुपए का सहयोग दे सकते हैं । वर्तमान में मेरी दृष्टि में निम्न १५ व्यक्ति हो सकते हैं -

१) स्वामी आर्यवेंश, २) स्वामी अग्निवेश, ३) श्री विट्ठलराव, ४) श्री मायाप्रकाश त्यागी, ५) श्री मिठाईलाल सिंह, ६) श्री सुरेश अग्रवाल (गुजरात), ७) श्री गोविन्द सिंह भण्डारी (उत्तरखंड), ८) श्री रामवेश (हरियाणा), ९) ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र (हरियाणा), १०) श्री हरिसिंह, पूर्व मंत्री (हिसार), ११) श्री आनन्द आर्य, १२) श्री अनिल आर्य (दिल्ली), १३) श्री देवेन्द्रपाल वर्मा (उत्तरप्रदेश), १४) श्री रमाकांत सारस्वत, १५) सत्यव्रत सामवेदी ।

सार्वदेशिक सभा को अत्यन्त गतिशील एवं सक्रिय नेताओं की अध्यक्षता में तीन सभाएं गठित करनी चाहिए ।

१) धर्मार्य्य सभा, २) राजार्य्य सभा, ३) विद्यार्य्य सभा ।

राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महा सम्मेलन दान दाताओं की सूची

1.	आर्य समाज नलगोण्डा	2,00,000-00
2.	आर्य समाज निजामाबाद	1,00,116-00
3	श्री वेणुगोपाल जी जड़चर्ला	1,00,000-00
4.	आर्य समाज बोइनपल्ली	51,000-00
5.	श्री विट्ठलराव जी आर्य (प्रधान सभा)	51,000-00
6.	आर्य समाज सुचित्रा	50,000-00
7.	श्री के.वी.रेड्डी जी के द्वारा 10 क्विण्टल चावल	40,000-00
8.	आर्य समाज बिचुकुन्दा	25,000-00
9.	श्री ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी धूलपेट	21,000-00
10.	श्री के.वी. रेड्डी जी (जड़चर्ला)	21,000-00
11.	आर्यसमाज धूलपेट	21,000-00
12.	श्री अमरसिंह जी लक्ष्मीनगर	20,000-00
13.	श्री राजेश्वर जी प्रधान मीरपेट	11,000-00
14.	श्री सत्यदेव जी आर्य गज्वेल	11,000-00
15.	श्री श्रीनिवास जी (कार्यालय अध्यक्ष)	11,000-00
16.	श्री आर. रामचन्द्रकुमार जी (उम्दाबजार)	11,000-00
17.	डॉ वसुधा अरविन्द शास्त्री जी	11,000-00
18.	श्री गुरुनारायणजी	11,000-00
19.	श्री शरत्चन्द्र जी (देवेन्द्रनाथ सुपुत्र)	10,000-00
20.	श्री बी. भद्रय्या जी वेन्नाचेड़	10,000-00
21.	श्री अर्जुन कुमार जी जयसवाल,	5,100-00
22.	डी. वेंकटनरसय्या जी, निजामाबाद	5,100-00
23.	मद्नूर आर्यसमाज	5,001-00
24.	श्री गडीला आञ्जनेयुलु जी कवाड़ीगुड़ा	5,000-00
25.	श्री पी. सत्यनारायण जी, मीरपेट	5,000-00
26.	श्री वेदसिन्धु जी	5,000-00
27.	मेसर्स कैलाश मेडिकल हॉल	5,000-00
28.	श्री बाल रेड्डी जी. गुडिमल्कापुर	2,100-00

प्रत्येक सभा की संगठन पद्धति १०-१००-१००० की होनी चाहिए ।

निम्नलिखित राष्ट्रीय समस्याओं पर हमें आंदोलन और सम्मेलन करने चाहिए-

१) नशाबंदी और शराबबंदी, २) किसानों की समस्या, ३) पूंजीवाद का विरोध, ४) गौरक्षा के लिए आंदोलन एवं प्राणी हत्या के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान, ५) अंधविश्वास व पाखण्ड के विरुद्ध राष्ट्रीय अभियान, ६) आतंकवाद के विरुद्ध आंदोलन, ७) हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने का अभियान, ८) समान शिक्षा नीति, ९) दलितोंद्धार सम्मेलन, १०) माल्या जैसे ठगों के विरुद्ध संस्द पर प्रदर्शन और जिन सौ ठगों ने राजनेताओं के सहारे गरीब जनता का खरबों रुपया लूटा है उन्हें आजीवन कारावास दिलाने के लिए संसद पर प्रदर्शन, ११) भ्रष्टाचार समाप्त करने प्रत्येक प्रांत में लोकपाल विधेयक, १२) भ्रूण हत्या के विरुद्ध राष्ट्रीय आंदोलन, १३) महिला अत्याचार व बलात्कार के विरुद्ध राष्ट्रीय आंदोलन, १४) स्वेदशी आंदोलन ।

सत्यव्रत जी सामवेदी

www.thearyasamaj.org

दयानंद की प्रासंगिकता

-स्वामी अग्निवेश

महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने विलक्षण व्यक्तित्व और कृतित्व से उन्नीसवीं सदी के पराधीन और जर्जरित भारत को गहराई तक झकझोरा था । उसका प्रभाव हम इक्कीसवीं सदी में भी महसूस कर रहे हैं और उनसे प्रेरणा पाकर उन सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक, अंधविश्वासों से लोहा ले रहे हैं जो दीमक बनकर समाज व धर्म को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं । सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक जगत की व्याधियों, दुर्बलताओं और त्रुटियों का तलस्पर्श अध्ययन उन्होंने किया था । रोग के अनुसार ही उन्होने उपचार किया । तब तक ऐसा सर्वंगीण प्रयास किसी भी समकालीन सुधारक से न हो सका था ।

महर्षि दयानंद का मूलतः वेद पर आधारित था, जो अपने उद्‌भव काल से ही स्वप्रमाणित, चिरंतन और शाश्वत समझे जाते रहे हैं । दयानंद जितने प्रासंगिक उन्नीसवीं शताब्दी में थे उतने ही प्रासंगिक हर युग-खंड में रहेंगे । कारण, विज्ञान और तकनीक चाहे जितनी उन्नति कर ले मनुष्य की धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की भाव-भूमि वही रहेगी जो अनादि काल से चली आ रही है और अनंत काल तक चलती रहेगी । जीवन के इस क्रम, सत्य, तथ्य व लक्ष्य को न विज्ञान बदल सकता है और न ही तकनीक । महर्षि-दर्शन हर युग के मानव को दिशा-बोध प्रदान करता रहेगा और हर युग के लिए वह प्रासंगिक बने रहेंगे ।

दयानंद का जो मूल्यांकन किया गया वह अधूरा तो है ही, यथार्थ से भी कोसों दूर है । उन्हें मात्र हिंदू समाज सुधारक, कट्टर राष्ट्रवादी, पंथों का कटु आलोचक या आर्य समाज जैसी जुझारू व लड़ाकू संस्था का संस्थापक मान लेना उनके प्रति अन्याय है । इन चौखटों में उन्हें कैद करके हमने उनके द्वितीय और भव्य जीवन दर्शन का अवमूल्यन करने का अपराध किया है । यह ठीक है कि समकालीन समस्याओं से भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा था लेकिन यह उनके संघर्ष की इति नहीं आरंभ था । दयानंद का मूल्यांकन पूर्वाग्रहों से नहीं बल्कि उस दृष्टिकोण से होगा जो आगे चल कर रोम्यांरोला, योगी अरविंद घोष, साधु टीएल वास्वानी आदि ने अपनाया । दयानंद मानवतावादी, वैश्य-संस्कृति के उद्‌गाता, विश्व शांति के महानायक, सांप्रदायिक, सद्‌भावना के उन्नायक, समाजवादी मूल्यों के प्रवक्ता और अन्याय, अज्ञान, अभाव और शोषण के विरुद्ध संघर्षरत रहनेवाले कालजयी योद्धा थे ।

स्थूल रूप से देखें तो महर्षि दयानंद का संघर्ष मूलतः पौराणिक हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों, जैनियों व सिखों से था क्योंकि उनके धर्मग्रंथों को लेकर उन्होंने कठोर टिप्पणियां 'सत्यार्थ प्रकाश' में की हैं । लेकिन ऐसा निष्कर्ष निकालने से पूर्व हम उनके ऋषित्व को भूल जाते हैं और यह भी भूल जाते हैं कि खंडन में अगर उन्होंने दस पृष्ठ लिखे हैं तो मंडन में सौ पृष्ठ लिखे हैं । उनका खंडन तर्कयुक्त, धर्मयुक्त, विज्ञानयुक्त और वैदिक गरिमा से ओत-प्रोत है । सत्यार्थ प्रकाश के अलावा भी उन्होंने छोटे-बड़े लगभग साठ ग्रंथों की रचना की थी । उनके इन ग्रंथों के प्रचार एवं विशद व्याख्या पर इतना ध्यान नहीं दिया गया जितना दिया जाना चाहिए था, तथापि प्रभाव की दृष्टि से इन ग्रंथों को कम आंकना दुष्कर है । यही कारण था कि दयानंद का आलोचक स्वरूप अधिक प्रखर और मुखर और मुखर होकर सामने आया । इन उपेक्षित ग्रंथों में से कुछ की चर्चा यहां करना अप्रासंगिक न होगा ।

सत्यार्थ प्रकाश ने अंधविश्वास, कुरीतियों, मूर्तिपूजा, अवतारबाद, बहुदेववाद, श्रद्धा, तीर्थाटन पर जो जमकर प्रहार किया ही पर इसके साथ-साथ स्वाधीनता की रणभेरी भी बजाई, अपने इतिहास पर गर्व के भाव उत्पन्न किए, अपनी परंपरा के प्रति आस्था और संस्कृति के प्रति विश्वास जगाया, स्वदेशी का मंत्र जनमानस में फूंका, सेमेटिक संप्रदायों द्वारा चलाए जा रहे धर्मांतरण के अभियान पर रोक लगाई । नर-नारी की समानता की अलख जगाई और अस्पृश्यता के विरुद्ध शंखनाद किया । 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखकर उन्होंने वेदभाष्य की कुंजी विद्वत् समाज को दी । पश्चिमी वेदज्ञों द्वारा वेदों पर हो रहे अनर्गल प्रहारों को रोका, वेदोंके उदात्त, विशाल और गंभीर स्वरूप को प्रकट किया । अंग्रेज शासकों को उनके आंदोलन में १८५७ के विप्लव की गंध आई और इसे खतरनाक आंदोलन मानते हुए अपने खुफिया तंत्र को सक्रिय कर दिया लेकिन उन्होंने एक बागी फकीर बनकर अपने ढंग से स्वराज का मंत्र जन-जन तक पहुंचाया । नीचे ही नीचे उन्होंने क्रांति की प्रचंड पृष्ठभूमि तैयार कर डाली । बहुत कम लोगों को पता है कि अपने इस अभियान के कारण ही ऋषि दयानंद को अपना बलिदान देना पड़ा । राजनीतिक हत्याओं के रहस्य शताब्दियों बाद जाकर खुलते हैं । यही त्रासदी ऋषि हत्याकांड के साथ हुई । यह वह समय था जब पाश्चात्य जीवन मॅल्यों के प्रति भारतीय जनमानस में कुछ लोग आस्था का भाव जगा रहे थे और अनेक सुशिक्षित भरतीय ईसाइयत की दीक्षा ले चुके थे । राजा राममोहन राय के ब्रह्मसमाज का केशवचंद सेन के नेतृत्व में ईसाईकरण हो रहा था । समय की इस मुखर चुनौती कासामना करते हुए ऋषि दयानंद ने 'संस्कारविधि' लिखी और भारतीयों को इस देश की मिट्टी की

www.thearyasamaj.org

परंपरा व संस्कृति से जोड़कर उन्हें सशक्त किया। यह अभियान उन मूर्तिपूजक पुजारियों के लिए एक सुविधाजनक आर्थिक विकल्प था जो सोचते थे कि मूर्तिपूजा छोड़ने से उनकी रोजी-रोटी छिन जाएगी। संस्कारविधि ने यज्ञ, यज्ञोपवीत, संध्या आदि की प्राचीन विलुप्त परंपराओं को पुनर्जीवित किया, जिन पर केवल ब्राह्मणों का एकाधिकार हो गया था। नारी-शिक्षा व नर-नारी समानता की अलख भी संस्कारविधि ने लगाई। इसलिए इससे एक बहुआयामी मानसिक क्रांति का सूत्रपात हुआ। आज सर्वत्र भ्रष्टाचार, व्यभिचार, नशाखोरी, आतंकवाद, प्रदूषण, हिंसा, अपराधवृत्ति, विकसित राष्ट्रों की दादागिरी, शोषण, अन्याय, अज्ञान और अभाव का बोलबाला है। हर समाज व राष्ट्र इन सभी दोषों से आहत और व्याकुल है। दयानंद सरस्वती ने इन समस्त रोगों का उपचार पंचमहायज्ञ का विधान प्रस्तुत करके किया। विज्ञान और तकनीक अपने साथ उपभोक्तावादी संस्कृति के अभिशप्त परिणाम भी लाती है जिनका प्रतिकार आध्यात्मिक चेतन द्वारा ही संभव है। पंचमहायज्ञ इस आध्यात्मिक चेतना के मूल स्त्रोत हैं।

महर्षि दयानंद द्वारा पुनर्स्थापित जीवन दर्शन का मूल्यांकन भारतीय संदर्भ में करने के हम अभ्यस्त हो चुके हैं, जिससे उसका स्वरूप संकुचित और प्रभाव क्षीण होता है। महर्षि दयानंद ने वेद, योग, पंचमहायज्ञ, यज्ञोपवीत, आयुर्वेद, इतिहास, संस्कृति संस्कार आदि के प्रति आस्थाभाव जगाकर उन ऋषिकृत परंपराओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया था। जिन परंपराओं ने अतीत में भारत को विश्गुरु के पद पर स्थापित और प्रतिष्ठित कराया था। यह युग तुलनात्मक अध्ययन का युग है। तर्क और विज्ञान की कसौटियों में लोगों का विश्वास पहले से ही अधिक बढ़ा है, इसलिए दयानंद के जीवन-दर्शन के फलते-फूलने की व्यापक संभावनाएं आज भी मौजूद हैं। इन अवसरों व संभावनाओं का समुचित लाभ उठाकर महर्षि दयानंद की प्रासंगिकता विश्व

दूरभाष २७०११३१२
09868144317

प्रो० रघुवीर वेदालङ्कार (एम०ए० पी-एच०डी०)
वेद-व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ (लब्धसुवर्णपदक)
पूर्व ~~रीडर~~- संस्कृतविभाग, रामजस कॉलेज, मौरिसनगर, दिल्ली-११०००७
अध्यक्ष— प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान, दिल्ली; संस्थापक—वेदमन्दिर, रोहिणी, दिल्ली
निवास— बी २६६, सरस्वती विहार, दिल्ली ११००३४

दिनाङ्क ६-१२-२०१६

सम्माननीय डॉ० विट्ठल राव जी,
सादर नमस्ते

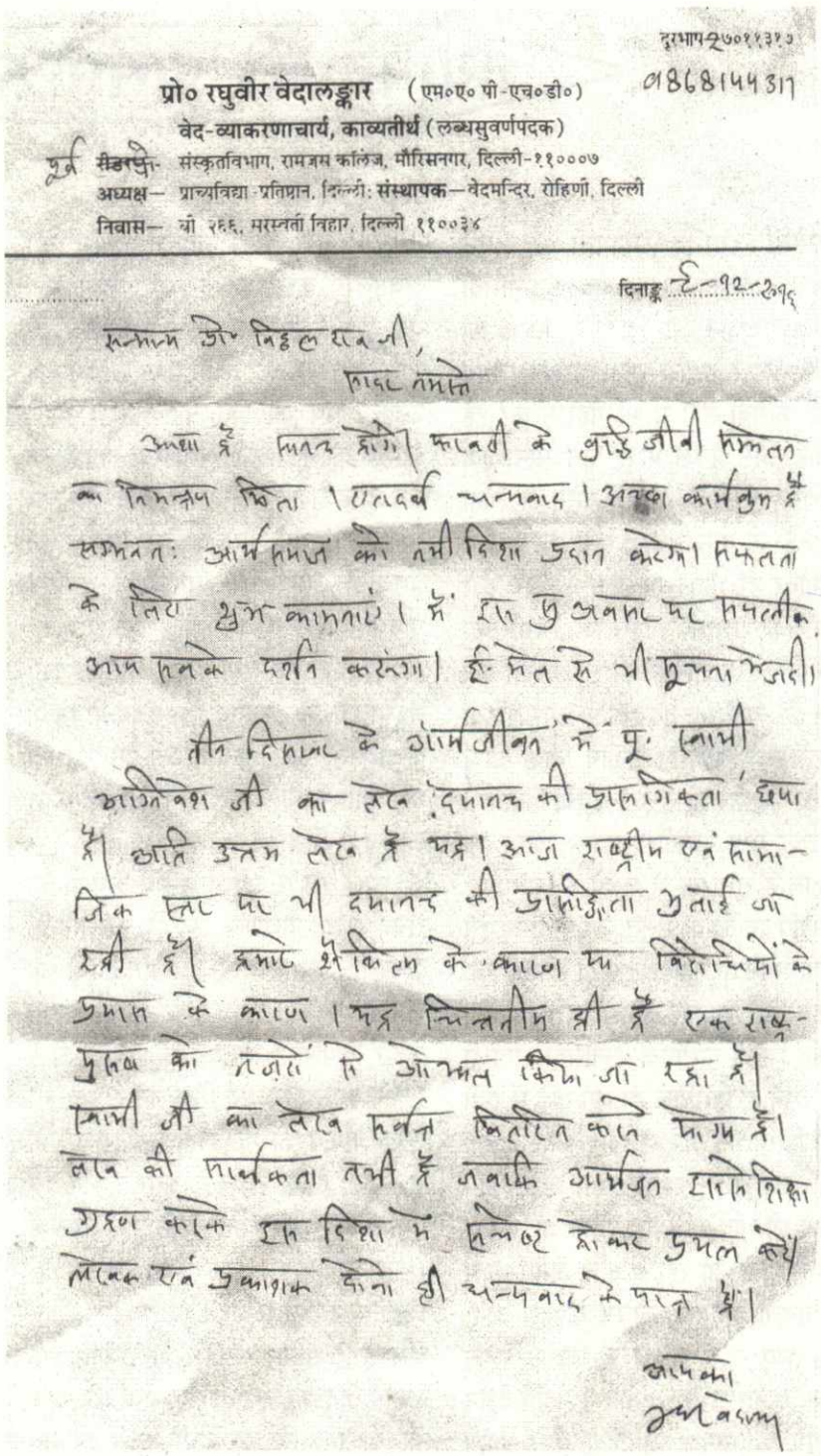

आशा है सानन्द होंगे। फरवरी के बुद्धिजीवी सम्मेलन का निमन्त्रण मिला। एतदर्थ धन्यवाद। आपका कार्यक्रम है समन्ततः आर्यसमाज को नयी दिशा प्रदान करेगा। सफलता के लिए शुभ कामनाएं। मैं इस शुभ अवसर पर सपत्नीक आप सबके दर्शन करूंगा। ई-मेल से भी सूचना भेज दी।

नव दिसम्बर के 'आर्यजीवन' में पू. स्वामी अग्निवेश जी का लेख 'दयानन्द की प्रासंगिकता' छपा है अति उत्तम लेख है यह। आज राष्ट्रीय एवं सामाजिक स्तर पर भी दयानन्द की प्रासंगिकता घटाई जा रही है हमारे शैक्षिक[illegible] के कारण या विरोधियों के प्रभाव के कारण। यह चिन्तनीय भी है एक राष्ट्र-पुरुष को नज़रों से ओझल किया जा रहा है। स्वामी जी का लेख सर्वत्र वितरित करने योग्य है। लेख की सार्थकता तभी है जबकि आर्यजन इससे शिक्षा ग्रहण करके इस दिशा में संलग्न होकर प्रयत्न करें। लेखक एवं प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

आपका
रघुवीर वेदालंकार

स्तर पर भी सिद्ध और मुखर की जा सकती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि ऋषि दयानंद ने दिल्ली दरबार के अवसर पर सभी संप्रादायों के आचार्यो को आमंत्रित करके एक ऐसी मानव आचार संहिता तैयार करने का आह्वान कियाथा जो सर्वानुमोदित हो। आधुनिक विश्व आज इसी ओर बढ़ रहा है। महर्षि दयानन्द ने जो प्रयोग डेढ़-दो सौ वर्ष पूर्व किए थे। धीरे-धीरे वे प्रयोग समय की कसौटी पर आज खरे उतर रहे हैं और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रहे हैं। जरूरत यह है कि दयानंद के जीवन दर्शन को विश्व पटल पर प्रस्तुत करने का अभियान शुरू हो। टेम्स, वोल्गा और गंगा की धाराएं मिलकर जब त्रिवेणी बनाएंगी तभी ऋषि दयानंद का कीर्तिध्वज विश्व भर में लहरा सकेगा।

www.thearyasamaj.org

ఇదిగో నజరానా !

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

అలాంటి పరిస్థితి వస్తుందని బఖ్త్‌ఖాన్ ఎన్నడూ ఊహించలేదు. రోహిల్‌ఖండ్ నుంచి వేలాది సైనికులతో, అట్టహాసంగా ఢిల్లీ వచ్చి రాజును మెప్పించి ఆ పఠాన్ యోధుడు జనరల్ హోదానూ, కమాండర్ ఇన్ చీఫ్ పదవినీ పొంది ఇంకా మూడో నెల తిరగలేదు. ఇంగ్లీషు వారని తరిమివేశాక 'బహదూర్' బిరుదు ఇవ్వాలని రాజును ముందే ఒప్పించుకున్న తనకు... తోకముడిచి పారిపోదాం రమ్మని అదే రాజుకు సలహా ఇవ్వాల్సిన దుర్గతి పడుతుందని అతడు కలలో కూడా అనుకోలేదు.

బఖ్త్‌ఖాన్ తప్పేమీ లేదు. కుంపిణీ పక్షాన నలభై ఏళ్లు ఎన్నో యుద్ధాల్లో ఆరితేరిన అనుభవశాలి అతడు. పౌరుషం, పరాక్రమం, నాయకత్వ లక్షణం అన్నీ ఉన్నవాడే. ఖజానా ఖాళీ అయిన స్థితిలో, రాజును అడక్కుండా తన సైనికుల జీతాలు తన జేబునుంచి చెల్లిస్తూ, హద్దు అదుపూ లేని తుంటరి రాజకుమారులు తెచ్చే తల నెప్పులను భరిస్తూ, నిందలను సహిస్తూ, క్రమశిక్షణ లేకుండా ఇష్టానుసారంగా చెలరేగే సైనిక వర్గాలను ఒకదారిన పెడుతూ, అనేకానేక సమస్యలతో సతమతమవుతూ అతడు గణనీయ విజయాలే సాధించాడు. తెరవిలేని దాడులతో తెల్లవారి గుండెల్లో గుబులు పుట్టించాడు.

ఏం లాభం ? రాజదర్బారులో, రాజ కుటుంబంలోనే ద్రోహులు తయారై, రాజుతో ఉదయం చేసే రహస్య సమాలోచన సాయంత్రానికల్లా శత్రువుకు చేరిపోయే టప్పుడు, సైనిక శ్రేణుల్లోనూ శత్రువుల ఏజంట్లు చొరబడినప్పుడు ఎంత గొప్ప సేనాపతి మాత్రం ఏమి చేయగలడు ? ఇంగ్లీషువారు మళ్లీ తిరిగొస్తారనీ, ఎదురు తిరిగిన వారి ఉసురు తీసి తీరతారనీ రాజు, రాణి, మంత్రులే భయపడి, దొరల అనుగ్రహ వీక్షణం కోసం వెంపర్లాడినప్పుడు మామూలు మనుషుల సంగతి చెప్పేదేముంది ? గెలిచేవారికి జైకొట్టటం మేలన్న అవకాశ వాదంతో చిన్నా పెద్దా అధికారులూ, బతకనేర్చిన వ్యవసాయులూ తెల్లవాళ్లు అడక్కుండానే ఏ ఆశా పెట్టకుండానే సహాయ పడటానికి సంసిద్ధమైన స్థితిలో సైనికుడు అడక్కుండానే, ఏ ఆశా పెట్టకుండానే సహాయ పడటానికి సంసిద్ధమైన స్థితిలో సైనికుడుఎంత బలాధిక్యంతో, ఎంత భీకరంగా పోరాడి మాత్రం ప్రయోజనమేమిటి ? కుట్రలు, లాలూచీలు ఏ స్థాయిలో ఎంత తీవ్రంగా జరిగాయన్నది తెలియకపోయినా, శత్రు సైన్యం లాలూచీలు ఏ స్థాయిలో ఎంత తీవ్రంగా జరిగాయన్నది తెలియకపోయినా, శత్రు సైన్యం లాలూచీలు ఏ స్థాయిలో ఎంత తీవ్రంగా జరిగాయన్నది తెలియకపోయినా, శత్రు సైన్యంఢిల్లోకి వచ్చి కోటను బద్దలు కొట్టడానికి కమ్ముకొస్తున్న స్థితిలో ఇంకా అక్కడ ఉంటే ప్రమాదమని బఖ్త్‌ఖాన్‌కు అర్థమైంది. కాలం ప్రతికూలించినప్పుడు వెనకడుగు వేయటమే ఉత్తమమని తోచింది. సెప్టెంబరు 19 రాత్రి విషణ్ణవదనంతో రాజు చెంతకు పోయి ఆ మాటే చెప్పాడు.

"ఇక ఇక్కడ లేము. అలాగని అంతా అయిపోయినట్టు నిస్పృహ చెందాల్సిన పని లేదు. మొత్తం హిందుస్తాన్ తెల్లవాళ్లపై కత్తిగట్టి పోరాడుతున్నప్పుడు ఈ ఒక్క నగరం శత్రువు వశమైతే మాత్రమేమి ? దేశమంతా మీ నాయకత్వం కోసం ఎదురు సూస్తోంది. దయచేసి నాతో రండి. కొండ ప్రాంతాలకు వెళ్లి, అక్కడినుంచి పోరాటం కొనసాగిద్దాం. మనలో మనకి సఖ్యత, పరస్పర విశ్వాసం లేకపోవటమే అనర్థానికి కారణం. ఒకరినొకరు దెబ్బతియ్యటానికే శక్తియుక్తులన్నీ వెచ్చించటం శత్రువుకు లాభించింది. ఐనా ఫరవాలేదు. మీరు కనుక సురక్షిత ప్రాంతానికి వెళ్లి యుద్ధం సాగిస్తే యావద్దేశం మీ వెంట ఉంటుంది. మీరు విజయాలను సాధిస్తూ పోతే అన్ని రాజ్యాలవాళ్లూ మీ పక్షాన చేరతారు. తెల్లవాళ్లు క్రైస్తవ మతాన్ని బలవంతంగా రుద్ది మనల్ని మతభ్రష్టుల్ని చేయజూస్తున్నారన్న కసి అందరిలోనూ ఉంది. కావలసిందల్లా పోరాడే యోధులు; వారికి ఆహారం, ఆయుధాలు ! వాటికి దేశంలో కొదవలేదు. ఇంగ్లీషు వాళ్లు పిల్లాజెల్లా సహా తమ దేశంలోని వారందరినీ తీసుకుని దండెత్తి వచ్చినా శతాబ్దాల పాటు వారితో యుద్ధం చేయగల శక్తి మనకుంది. ఇవన్నీ మీకు నేను చెప్పటం సూర్యుడికి దివిటీ చూపించినట్టే ఉంటుంది. సారా హిందుస్తాన్ మీ పతాకం కింద నిలబడి పోరాడటానికి సిద్ధంగా ఉంది. మీరు నాతో వస్తే కొద్దిరోజుల్లో చిక్కులన్నీ చక్కజేసి మిమ్మల్ని సంతోష పెట్టగలను. దయచేసి ఒప్పుకోండి."

బఖ్త్‌ఖాన్ ఉద్వేగంతో చేసిన ఈ ప్రసంగానికి పాదుషా ముగ్ధుడయ్యాడు. "నేను హుమాయూన్ సమాధి మందిరానికి వెళుతున్నాను. రేపు ఉదయం అక్కడికి రా. ఆలోచించి చెబుతాను" అన్నాడు.

బఖ్త్‌ఖాన్ సెలవు తీసుకుని వెళ్లాడో లేదో అక్కడే కాచుకుని ఉన్న మీర్జా ఇలాహి బక్ష్ పాదుషా చెవులు కొరికాడు. అతడు రాజు వెంటే ఉంటాడు. కాని ఇంగ్లీషు వారి మనిషి. ఢిల్లీ కొలువులో ముఖ్య గూఢచారి అయిన మున్షీ రజబ్ అలీ అతడికి ముందే చెప్పి పెట్టాడు. ఎలాగైనా రాజును తిరుగుబాటుదారులతో వెళ్లనివ్వకు. ఇక్కడే ఉండేట్టు చూడు. నువ్వీ పని చేసిపెడితే దొరలు నీకూ, నీ పిల్లలకూ ఏ లోటూ లేకు?ండా చూసుకుంటారు- అని ! (అది నిజమే. మీర్జా ఇలాహి బక్ష్ సేవకు మెచ్చి దొరవార్లు ఆ తరువాత అతడికీ, అతడి పిల్లలకూ జీవితాంతం 1200 రూపాయల పింఛను ఇచ్చారు.)

ఇంకేం ? పంచతంత్రంలో దమనకుడి తరహాలో మీర్జా ఇలాహి రాజుకు బోధ చేశాడు. "లార్డ్ గవర్నర్ బఖ్త్‌ఖాన్ గారు చెప్పింది బాగానే ఉంది. కాని నేనో మాట అడుగుతా. ఇప్పుడు నడుస్తున్న యుద్ధం మీకూ ఇంగ్లీషు వారికీ మధ్యా ? లేకా- ఇంగ్లీషు వారికీ తిరుగుబాటు సైన్యానికీ నడుమా ? సిపాయిలు తెల్లవారి మీద కక్షగట్టి తిరుగుబాటు చేసి మీ దగ్గరికి వచ్చారు. నిస్సహాయులైన మిమ్మల్ని బలవంతపెట్టి అన్నీ చేయించుకున్నారు. ఆ సంగతి ఆంగ్లేయులకు తెలుసు. మీ ప్రమేయం లేకుండా నిర్ణయాలన్నీ మీ పేర వాళ్లే చేశారన్న సంగతీ వారెరుగుదురు. కాబట్టి మీ మీద దొరలు కోపగించరు. బఖ్త్‌ఖాన్ మాటలు విని మీరు వెళ్లి తిరుగబాటుదార్లతో చేరిపోతే మాత్రం మీ నిజాయితీని వారు శంకిస్తారు. ఐనా ఇంగ్లీషు వారిని తప్పించుకుని తిరుగుబాటుదారులు ఎక్కడకని వెళ్లగలరు ?

ఒకవేళ వెళ్లినా మీ మాట, బఖ్త్‌ఖాన్ మాట వింటారా ? మహా మహా బ్రిటిష్ వాళ్లే వీరిని అదుపు చేయలేకపోయినప్పుడు వీళ్లు మీ అదుపులో ఉంటారా ? ఇది మండు వేసవి. వచ్చేది వర్షాకాలం. సుకుమారపు రాణులను, రాజకుమార్తెలను తసుకుని ఈ వయసులో వీళ్లతో ఎక్కడికో పోయి యుద్ధాల గొడవల్లో మీరు కష్టాలెందుకు పడతారు ? నా మాట విని ఇక్కడే ఉండి పొండి. నేను దొరలతో మాట్లాడి మీకు, మీ కుటుంబానికి ఏ హాని జరక్కుండా చూస్తాను. దేశం ఏమైపోయినా మీరు బాగుంటారు."

రాజు ఏమి అనలేదు. "ప్రభూ ! ఇతడి మాట నమ్మకండి. ఇప్పటికే శత్రువులతో చేరిపోయాడు. చావు, కష్టాలు అందరికీ వచ్చేవే. బఖ్త్‌ఖాన్ చెప్పినట్టు చేయటమే సబబు"- అని రాజు మేలుకోరే కొజ్జా ఒకడు చెప్పాడు. దాంతో "ఇరుపక్షాలు చెప్పిందీ ఆలోచించి రేపు నా నిర్ణయం ప్రకటిస్తాను" అన్నాడు బహదూర్‌షా.

మర్నాడు ఉదయం రాణులతో కలిసి ఢిల్లీకి ఏడుమైళ్ల దూరంలోని హుమాయూన్ సమాధి ప్రాంగణానికి వెళ్లాడు. పరివారాన్ని అక్కడ ఉంచి తానొక్కడూ హజ్రత్ ఖ్వాజా నిజాముద్దీన్ ఔలియా క్షేత్రానికి వెళ్లి ప్రార్థన చేసి తిరిగొచ్చాడు. ఈ లోపు రజబ్ అలీ ద్వారా మేజర్ హడ్సన్‌కు మీర్జా ఇలాహి బక్ష్ సమాచారం చేరవేశాడు. బఖ్త్‌ఖాన్ రాజును కలవటానికి తూర్పు గేటు నుంచి వస్తాడు కనుక మీరు పడమర గేటు దగ్గరకి రండి, అతడు వెళ్లగానే రాజును పట్టుకోండి- అని ఉపాయం కూడా చెప్పాడు.

హడ్సన్ జనరల్ విల్సన్‌తో మాట్లాడాడు. ''ఎలాగైనా నరే రాజును బఖ్త్‌ఖాన్‌తో వెళ్లనివ్వకుండా చేసి, 24 గంటలపాటు అక్కడే అట్టేపెట్టమని చెప్పు. ఈలోపు మా పని మేము కానిస్తాం" అని రజబ్ అలీ చేత ఇలాహి బక్ష్‌కు కబురు చేశాడు.

అనుకున్నట్టే బఖ్త్‌ఖాన్ తూర్పు గేటు నుంచి వెళ్లి రాజును దర్శించాడు. మీర్జా ఇలాహి అక్కడే ఉన్నాడు. మళ్లీ వాదోపవాదాలు జరిగాయి. "లార్డ్ గవర్నర్ సాహెబ్ ! ఈ పరిస్థితుల్లో మీరు ప్రభువులను ఎందుకు వట్టుకు పోతున్నారు ? పాదుషా వారిని అడ్డం పెట్టుకుని ఆయన పేర హిందుస్తాన్‌ను ఏలాలనా మీ పన్నాగం ? గతంలో పఠాన్ల నుంచి మొగలులు రాజ్యం లాక్కున్నందుకు ఇలా ప్రతీకారం తీర్చుకోదలిచావా ? నువ్వూ పఠానువే కదా ? ఆ బుద్ధులు ఎక్కడికి పోతాయి" అంటూ రెచ్చగొట్టాడు మీర్జా. బఖ్త్‌ఖాన్ చర్రున కత్తి దూసి అతడిని చంపబోయాడు. రాజు వారించి సేనాపతితో ఇలా అన్నాడు.

"శాంతించు. నువ్వు చెప్పిందంతా నిజమే. నా మేలుకోరే. నాకు తెలుసు. కాని నా ఒంట్లో సత్తువ లేదు. ఏమి జరగాల్సి ఉంటే అది జరుగుతుంది. నన్ను విధి నిర్ణయానికి వదిలేసి నువ్వు వెళ్లు. అల్లా పేరు మీద ఏదో ఒకటి చెయ్యి. నేను, నా కుటుంబం లేకపోయినా హిందుస్తాన్ గౌరవం నిలపడానికి నీలాంటి వాళ్లు ఎందరో ఉన్నారు. నా కోసం బెంగపడకు. నీ కర్తవ్యం నువ్వు నిర్వర్తించు."

ఇక చేసేది లేక బఖ్త్‌ఖాన్ ఉసూరుమంటూ వచ్చినదారి పట్టాడు. వేచి ఉన్న సైన్యంతో కలిసి నది దాటి వెళ్లిపోయాడు. తరవాత ఏమ య్యాడో, ఎక్కడ ఎలా పోరాడాడో తెలియదు. బ్రిటిష్ వాళ్లకు మాత్రం చిక్కలేదు.

తిరగబడ్డ సేనకు నాయకత్వం వహించిందీ, ఎన్నో దాడులు చేసి, ఎన్నో విధాల నతాయించి తెల్లవాళ్ల గుండెల్లో నిద్రపోయిందీ బఖ్త్‌ఖాన్. కాబట్టి వారి క్రోధానికి ముందుగా అతడే గురిఅవుతాడని మనం అనుకుంటాం. కాని మహా పరాక్రమవంతులైన ఇంగ్లీషు వారు ఫలానా సమయాన ఫలానా గేటుగుండా ఫలానా చోటికి అతడు వచ్చి వెళతాడని ముందుగా తెలిసి కూడా పట్టుకునే ప్రయత్నం చేయలేదు. పైగా అతడి కంటపడితే ఏమవుతుందోనని భయపడి... అతడు తూర్పు నుంచి వెళితే వీరు పడమర వైపు నక్కి ఉన్నారు. సైనిక బలగంతో కలిసి అతడు దర్జాగా నిష్క్రమించాక, ఆ సంగతి మీర్జా ఇలాహీ ద్వారా ధ్రువపరచుకున్నాక హడ్సన్ పులి అయి పోయాడు. "వాళ్లు పోయారు. రాజు ఒంటరిగా ఉన్నాడు. అరెస్టు చేస్తా. అనుమతించండి" అని జనరల్ విల్సన్‌ను అడిగాడు. అతడు సరే అన్నాడు.

నిజానికి విల్సన్‌కైతే రాజును అక్కడిడక్కడే చంపాలని ఉంది. హడ్సన్‌దీ అదే కోరిక. ఐతే- తక్కిన సైన్యాధికారులు వారించారు. "ఢిల్లీని పట్టుకోగలిగినా హిందుస్తాన్‌లో తిరుగుబాటు ఇంకా భగ్గున మండుతూనే ఉంది. ఈ స్థితిలో చంపి రాజును అమరవీరుణ్ణి చేయటం కంటే అతడిని బంధించి, వరువుతీసి చెరలో వేయటమే తెలివైన పని" అని ! చివరికి విల్సన్ కూడా అంగీకరించాడు. హడ్సన్ యాభై మంది ఆశ్వికులను తీసుకుని హుమాయూన్ టూంబ్స్‌కు వెళ్లాడు. పడమటి గేటు దగ్గర ఆగి, "మిమ్మల్ని అరెస్టు చేస్తాం. మర్యాదగా వచ్చి లొంగిపొండి" అని రాజుకు కబురు పంపాడు. తలచుకుంటే అతడే సమాధి ప్రాంగణం లోపలికి పోయి రాజును బంధించి తీసుకు రావచ్చు. కాని భయం. ఏ చెట్టుచాటున బఖ్త్ మనుషులు కాపలా ఉన్నారోనని.

కబురు విని బహదూర్‌షాకు మతి పోయింది. "ఇంగ్లీషు వాళ్లకు నా మీద కోపం ఏమీ లేదని కదరా చెప్పావు ? ఇప్పుడు అరెస్టు చేస్తామంటారేమిట్రా" అని మీర్జా ఇలాహి మీద ఎగిరిపడ్డాడు. మీర్జా నేల చూపులు చూశాడు. కథ అడ్డం తిరిగిందని గ్రహించి రాజు "బఖ్త్‌ఖాన్‌ను వెనక్కి పిలవండి" అన్నాడు. కాని దొరల దాసులైన అతడి అనుచరులు అప్పటికే జీనత్ మహల్ రాణిగారిని సవరతీశారు. ఆమె కలగజేసుకుని "బఖ్త్‌ఖాన్‌ను పిలిపించే వ్యవధి లేదు. అతడెక్కడికి పోయాడో తెలియదు. అంతకన్నా మేజర్ హడ్సన్‌ను మంచిచేసుకుని, మీకూ, నాకూ, మనబ్బాయికీ ప్రాణాలకు ప్రమాదం లేకుండా అభయం ఇప్పించు కోవటం మంచిది" అని ఆలోచన చెప్పింది. ఆ ప్రకారమే రాజు సందేశం పంపాడు. హడ్సన్ సరే అన్నాడు. దీనిపై రెండు గంటలు తర్జన భర్జన జరిగాక రాణి, ఆమె కొడుకు పల్లకీలెక్కారు. ముసలి రాజు కర్ర ఊతంతో కలినడకన బయటికి వచ్చాడు. గేటు దగ్గరికి రాగానే "నువ్వేనా హడ్సన్" అని అడిగాడు. అతడు ఔనన్నాడు.

"నువ్వే హడ్సన్‌వి ఐతే... మా ముగ్గురి భద్రతకు పూచీ పడతానని నేను లోపలుండగా తెలియపరచిన హామీని నీ నుంచి మళ్లీ వినగోరుతున్నాను" అన్నాడు. రాజు. "మీకు ప్రాణ భయం లేదు. నిశ్చింతగా ఉండండి" అన్నాడు హడ్సన్.

పల్లకి వచ్చింది. రాజు ఎక్కాడు. గుర్రాల మీద సైనికులు వెంటరాగా రాజ పరివారం బయలుదేరింది. (అంతకు ముందు రాజు బయటికి రాగానే హడ్సన్ అతడి అంగీ వుచ్చుకుని నిలవెయ్యగా అమర్యాదకు ఆగ్రహించి రాజు సేవకుడొకడు హడ్సన్ పైకి కత్తి దూశాడట. పొడవబోతూంటో ఓ సోల్జర్ తుపాకి పేల్చి అతణ్ని చంపేస్తున్న దృశ్యాన్ని చిత్రించిన పెయింటింగు ఒకటి లార్డ్ కర్జన్ గారి ఢిల్లీ దర్బారులో అడుగుపెట్టగానే కనిపించేదట. కాబట్టి ఆ మర్యాద కూడా బహుదూర్ షాకు జరిగే ఉండాలి.)

www.thearyasamaj.org

హుమాయున్ సమాధుల నుంచి పాలెస్‌కు దగ్గరి దారిన నేరుగా కాకుండా లాహోర్ గేటు లోంచి చాందిని చౌక్ మార్కెట్ మీదుగా తీసుకువెళ్లారు. పాదుషాను బందీని చేసి పట్టుకెళుతున్న వైనాన్ని ఊరి జనమంతా చూడాలని అలా చేశారు.

పాలెస్‌కు చేరగానే "నేను జనరల్ విల్సన్‌ని చూడాలి" అన్నాడు రాజు. "నన్ను కలవాల్సిన అవసరమేమి లేదు. అతడి మొగం నేను చూడను'' అన్నడు విల్సన్. అప్పటికే ఆయనగారు ఎర్రకోటలో ప్రవేశించి అక్కడి ప్రత్యేక సమావేశ మందిరాన్ని త విడిదిగా చేసుకున్నాడు. రాజు తన నివాసంలోకి వెళ్లగానే సోల్జర్లొచ్చి బయట నిలబడ్డారు. మహా ఘనత వహించిన మొగల్ పాదుషా వారు తన కోటలోనే గృహ నిర్బంధం పాలయ్యారు. (మొక్కుబడి విచారణ తతంగంలో 'ఖైదీ' నేరం నిర్ధారించి దేశ బహిష్కారం విధించి రంగూన్ ప్రవాసానికి గెంటెయ్యటమే తరువాయి.)

మరునాడు (సెప్టెంబరు 21) రజబ్ అలీ, ఇలాహీ బక్ష్‌లు ఇంకో పెద్ద కబురు మోసుకొచ్చారు. మొన్నటిదాకా సైనిక కమాండర్లుగా ఉన్న రాజ కుమారులు మీర్జామొగల్, మీర్జా ఖైర్ సుల్తాన్, మీర్జా అబుబకర్‌లు ముగ్గురూ హుమాయున్ సమాధుల దగ్గరే దాక్కుని ఉన్నారట. వాళ్ల పేరు చెప్పగానే హడ్సన్‌కు ఒళ్లు తెలియని కోపం వచ్చింది. కోటలో ఎంతో మంది బ్రిటిష్ మహిళలను, పిల్లలను నిష్కారణంగా ఊచకోత కోయించింది ఆ వెధవలే కదూ ? వాళ్లనంత తేలిగ్గా వదిలేస్తే ఎలా ? వెంటనే జనరల్ విల్సన్‌కి చెప్పి అనుమతి తీసుకుని హడ్సన్ బుసలు కొడుతూ బయలుదేరాడు. ఈసారి 50 మందిని కాదు వంద మంది సైనికులను వెంటేసుకు వెళ్లాడు. కరటక దమనకుల్లాంటి రజబ్ అలీ, ఇలాహి బక్ష్‌లూ తమాషా చూడటానికి వారి వెంట పడ్డారు.

హడ్సన్ ఎకాఎకి సమాధుల ఆవరణకు వెళ్లాడు. ముగ్గురు మీర్జాలూ లోపలే ఉన్నారు. హడ్సన్ నేరుగా వారి దగ్గరికి వెళ్లి వారిని బంధించినా అడ్డుకోగల స్థితిలో వారు లేరు. కాని 'మహావీరుడు' హడ్సన్‌కి ధైర్యం చాలలేదు. లోపల ఎంతమంది ఉన్నారో, ఎక్కడ నక్కారో, వారి చేతుల్లో ఏ ఆయుధాలున్నాయో ఎవరికెరుక ? లోనికెళితే ఏమవుతుందో !! ఆ భయంతోటే కిందటిరోజు రాజును పట్టుకోబోయినప్పటిలాగే ఈసారీ శూరాగ్రేసరుడైన దొరగారు నూరుగురు సాయుధ సైనికులు వెంట ఉన్నా ధైర్యం చెయ్యలేక గేటు బయటే ఆగి, రాజ కుమారులకు కబురు చేశాడు.

"ప్రాణాలకు భయం లేదని నిన్న మా తండ్రికి ఇచ్చినట్టే మాకూ హామీ ఇస్తే లొంగిపోతాం" అని ముగ్గురబ్బాయిలు షరతు పెట్టారు. "నాకు ఆ అధికారం లేదు. మా జనరల్ విల్సన్ గారి అనుమతి లేకుండా నేనేమీ చెప్పలేను. మీరు బేషరతుగా లొంగిపోయి తరవాత ఆయనను ప్రార్థించండి. మీ మనవి తప్పక ఆలకిస్తాడు" అన్నాడు హడ్సన్. దానిపై రాజకుమారులు తర్జన భర్జన చేశారు. "ఎప్పటికైనా చావాల్సిన వాళ్లమే. లొంగిపోవట మెందుకు ? కత్తి పట్టి చావో రేవో ఇక్కడే తేల్చుకుందాం" అన్నారు ఉడుకు రక్తపు అనుయాయులు. మళ్లీ గుంటనక్క మీర్జా ఇలాహి అడ్డుపడి, తండ్రికి చేసినట్టే కొడుకులకూ దుర్బోధ చేశాడు. హడ్సన్‌కి మిమ్మల్ని చంపే అధికారం లేదు. ఏదైనా జనరల్ విల్సనే చేయాలి. మీరు వెళ్లి ఆయనను వేడుకుంటే మీ తండ్రిని లాగే మిమ్మల్నీ కనికరించగలడు. గొడవ చేస్తే హడ్సన్ మిమ్మల్ని ఇప్పుడే చంపేస్తాడు. ఇక మీ ఇష్టం - అన్నాడు. అతడి మాయలో పడి ముగ్గురు కుర్రాళ్లూ అనుచరులకు వీడ్కోలు పలికి గేటు బయట హడ్సన్‌కు లొంగిపోయారు.

హడ్సన్ వాళ్లను చూడగానే గుడ్లెర్ర చేశాడు. కాని ఏమీ మాట్లాడలేదు. నాలుగు చక్రాల గుర్రపు బండిలో వారిని ఎక్కించాడు. ముందూ వెనకా ఆశ్విక దళం వారి పహారాలో 'ఊరేగింపు' కదిలింది. ఢిల్లీ ఇంకా మైలు దూరం ఉందనగా హడ్సన్ బండిని ఆపించి, రాజకుమారులను దిగమన్నాడు. దిగారు. ఒంటి మీద బట్టలు తీసెయ్యమన్నాడు. తీశారు. ఒట్టి చెడ్డీలతో నిలబడ్డారు. చంపే అధికారం లేదు కనక తమను అర్ధనగ్నంగా నడిపించి, జనం ముందు ప్రమానిస్తాడు కాబోలని వాళ్లు అనుకున్నారు. కాని కాదు. వారిని ఆ స్థితిలో చూస్తూనే హడ్సన్ పిచ్చెత్తినట్లు రెచ్చిపోయాడు. దగ్గరున్న సైనికుడి చేతిలోని తుపాకి గుంజుకుని ముగ్గురు రాజ కుమారులనూ చుట్టూ జనం నిర్ఘాంతపోయి చూస్తుండగా టపటపా కాల్చేశాడు. వాళ్లు నేల కూలి నెత్తుటి మడుగులో గిలగిల కొట్టుకుని మరణించారు.

అక్కడితో ఆగితే దొరగారి గొప్పేముంది ? చచ్చిపడి ఉన్న ముగ్గురబ్బాయిల తలలూ కోయించాడు. పాలెస్‌కి తీసుకుపోయి పళ్లెంలో పెట్టించి బట్ట కప్పి జాగ్రత్తగా బహదూర్‌షాకు బహూకరించాడు. 'మేము నజరానా ఇవ్వలేదని కదా నువ్వు తిరుగుబాటుదార్లతో చేతులు కలిపావు. ఇదిగో నీ నజరానా, తీసుకో' అంటూ.

నాదిర్షా నయం

పెనం మీదనుంచి పొయ్యిలో పడ్డట్ట యింది ఢిల్లీ పౌరుల పరిస్థితి. తిరుగుబాటు దారుల చేతిలో నగరం ఉన్న నాలుగు నెలలూ వారు నానా అవస్థలు పడ్డారు. ముఖ్యంగా- జులాయిల్లా తిరిగే రాజకుమారులకు నడమంత్రపు అధికారం వచ్చాక వారిని పెట్టిన ఆరళ్లు అన్నీ ఇన్నీ కావు. పట్టపగ్గాల్లేకుండా సాగిన పగటి దోపిడీలు, లూటీలు, ఖూనాలతో విసిగి వేసారి, ఈ సైతాన్లు పోయి మళ్లీ తెల్లవాళ్లు వచ్చినా మంచిదేనని పురప్రముఖులు అనుకున్నారు. తిరగొచ్చిన తెల్లదొరల ప్రతాపాన్ని చూశాక పోయినవాళ్లే లక్ష రెట్లు నయమని వాళ్లకు అర్థమైంది.

తిరుగుబాటుదారులు ఆకలి బాధకు తాళలేనప్పుడే తప్ప దుకాణాలు లూటీలు చేసేవారు కాదు. యూరోపియన్లను దాచి పుచ్చారన్న అనుమానం వస్తేతప్ప ఎవరి ఇళ్లమీదా పడేవారు కాదు. తమకు ఆగ్రహం కలిగిస్తే తప్ప ఎవరినీ చంపేవారు కాదు. తమ జోలికి రానంతవరకూ సాధారణంగా ఎవరి జోలికీ వేళ్లేవారు కాదు. సామాన్య ప్రజా జీవనానికి వారివల్ల అంతో ఇంతో మేలే తప్ప కీడు వాటిల్లలేదు.

నాగరికులు, దయాళువులు, పాపులను క్షమించే క్రీస్తుభక్తులు అయిన దొరల తీరు వేరు. వారి దృష్టిలో తెల్లవాడు కాని ప్రతివాడు తిరుగుబాటుదారుడే. నేటివ్ జనులందరూ కుట్రదారులే. పిచ్చికుక్కల్లా చంపాల్సిన వారే. ఇంత ఘనమైన న్యాయదీక్షా ధురీణులైన దొరవార్లు 1857 సెప్టెంబర్ 21న నగరం మళ్లీ తమ వశం కాగనే ఏమి చేసిందీ కళ్లారా చూసిన ఒకానొక ఆంగ్లేయుడి మాటల్లో చదవండి.

"All the city people found within the walls when our troops entered were bayoneted on the spot; and the number

www.thearyasamaj.org

was considerable, as you may suppose, when I tell you that in some houses forty or fifty persons wee hiding. These were not mutineers but residents of the city, who trusted to our well-known mild rule for pardon. I am glad to say thay were disappointed."

[Martin Montgomery, *The Indian Empire*, Vol.II, P.449]

(మన సేనలు ప్రవేశించినప్పుడు నగరంలోవల కనిపించిన వురజనులందరినీ అక్కడికక్కడే జాయినెట్లతో పొడిచి చంపేశారు. కొన్ని ఇళ్లలో నలభై యాభై మంది దాకా దాక్కుని ఉన్నారంటే చచ్చిన వారి సంఖ్య చాలా ఎక్కువ అని మీకే అర్థమవుతుంది. వీళ్లంతా తిరుగుబాటుదారులు కాదు. నగరంలో నివసించేవారు. మన ఔదార్యం తెలుసు కనుక తమను క్షమిస్తామని వాళ్లనుకున్నారు. ఆ ఆశ నిరాశ అయిందని చెప్పడానికి నేను సంతోషిస్తున్నాను)

ఈ దొరగారు ఢిల్లీ ఇరుకు సందుల్లో తిరగడమే మానుకున్నారట. ఎందుకంటే కిందటిరోజు ఇరవై మంది సైనికుల్ని వెంటేసుకుని గస్తీ తిరుగుతూంటే ఒకచోట వధ్నాలుగు మంది మహిళల శవాలు కానవచ్చాయట. తెల్లవాళ్ల బారిన ఎక్కడ పడతారోనన్న భయంతో భర్తలే వాళ్ల మెడకాయలు కోసేసి తామూ ప్రాణాలు తీసుకున్నారట. ఆ దృశ్యం చూసి దొరవారికి కడుపులో దివందట.

"మన జోలికి ఏనాడూ రాకుండా తమ బతుకులు తాము ప్రశాంతంగా బతుకుతున్న వారిని... తమ జాతి వారి చేతుల్లో కిందటి రోజు వరకూ దోపిడీలకు, అఘాయిత్యాలకు గురి అయిన అభాగ్యులను మనవాళ్లు బాయినెట్లతో పొడిచి, ఈటెలను గుచ్చి, తుపాకులు పేల్చి చంపేశారు" అన్నాడు ఇంగ్లీషు చరిత్రకారుడు *Kaye*. బ్రిటిష్ చరిత్రకారుల గ్రంథాలు, హిందూ, ముస్లిం ప్రత్యక్ష సాక్షుల జ్ఞాపకాలు, ఇతర ఆధారాలు పరిశీలించి **Khwaja Hasan Nizami** 1922 లో వెలువరించిన ***The Agony of Delhi*** గ్రంథంలో నాటి ఘోరకలిని విపులంగా వివరించాడు. అందులోని విషయాలు మచ్చుకొన్ని:

సెప్టెంబర్ 14న బ్రిటిష్ సైన్యం ఢిల్లీ నగరంలో చొరబడినప్పుడే ఊరొదిలి పొమ్మని జనాన్ని హెచ్చరించారు. జామా మసీదు తెల్లవాళ్ల వశమైందని తెలిశాక చాలా కుటుంబాలు పరారైనా, ఎన్నో వేల కుటుంబాలు నగరంలోనే ఉండిపోయాయి. కర్నల్ బర్న్ నగరానికి మిలిటరీ గవర్నరుగా వచ్చాడు. ఇంకా నగరంలో ఉండిపోయిన వాళ్లెవరన్నది గాలించి, ఇంట్లోని నగా నట్రాతో సహా వారిని తన ఎదుట హాజరుపెట్టమని అతడు సైనికులను పురమాయించాడు. వాళ్లేమో ఇళ్ల మీద పడి సోదాలు చేసి, విలువైన వస్తువుల్ని జేబులో వేసేసుకుని, సామాన్లన్నీ నెత్తిన పెట్టించి దొర దగ్గరికి వట్టికాళ్లతో నడపించేవారు. వీధిలో పరపురుషుల ఎదుట పడటం అలవాటు లేక, అవమానాన్ని భరించలేక, ఎందలో అంత దూరం నడవలేక ఎందరో కులీన స్త్రీలు సొమ్మసిల్లేవారు, సైనికులు కనికరం లేకుండా వారిని తిడుతూ, కొడుతూ ఈడ్చుకెళ్లేవారు. బర్న్ దొర వారి నెత్తిమీద మూటలు తనిఖీ చేసి, కొంచెం ఖరీదు చేసేవన్నీ లాగేసుకుని వారిని లాహోర్ గేటుకు పంపి, నగరం నుంచి గెంటించేవాడు. నిలవ నీడలేక, చేతిలో కాణీ లేకుండా కట్టుబట్టలతో ఎటుపోవాలో తెలియక, దారిలో దొంగల బాధపడలేక ఆకలి దప్పులను తాళలేక, పరువుగల కుటుంబీకులు పడిన యమయాతన చెప్పనలవి కాదు.

ఏనాడూ పరదా వీడి ఎరుగని గొప్పింటి ఇల్లాళ్లు ఎందరో- తమ మాన మర్యాదలకు ఎక్కడ భంగం వాటిల్లుతుందోనన్న భయంతో- తెల్లవాళ్లు రాకముందే పెరట్లోని బావిలో దూకి ప్రాణాలు తీసుకున్నారు. అలా ఎంతోమంది చేయటంతో బావులు మృతదేహాలతో నిండిపోయాయి. "శవాల మీద పడటం వల్ల ప్రాణం దక్కిన వారిని వందల సంఖ్యలో మేము బయటికి తీశాం. మమ్మల్ని చూడగానే వాళ్లు భయంతో, రోషంతో వణికిపోతూ, మేము కుల స్త్రీలం. పరాయి వాళ్లు తాకడాన్ని మేము సహించలేం. దయచేసి మమ్మల్ని కాల్చెయ్యండి అని దయనీయంగా ప్రార్థించారు" అని ఒక సైనికుడు చెప్పాడు.

ఎందరో కవులు, కళాకారులు, ప్రసిద్ధ వ్యక్తులు, పుర ప్రముఖులు నివసించే కచ్చా చలాన్ ప్రాంతం మిగతా వాటికంటే ఎక్కువ నష్టపోయింది. అక్కడి నవాబ్ షంషేర్ జంగ్ ఖాన్ ఇంట్లోకి ఒక తెల్ల సైనికుడు చొరబడి, స్త్రీలుండే గదుల్లోకి వెళ్లి అఘాయిత్యాలు చేయబోతూంటే ఖాన్ కుమారుడు అడ్డుకుని ఆ సైనికుడిని గాయపరిచాడు. కమాండింగ్ ఆఫీసరుకు ఆ వైనం తెలియగానే భగ్గుమని ఆ ప్రాంతంలో ఉండే వాళ్లని ఒక్కర్నీ వదలకుండా చంపండి లేదా బంధించి తెండి అని ఉత్తర్వు వేశాడు. సైనికులు మిడతల దండులా విరుచుకుపడి ఇళ్లల్లో కనిపించిన వారిని కనిపించినట్టు క్రూరంగా నరికేశారు. మరి వారు దయకలిగి బంధించి తీసుకుపోయిన వారో ? నది ఒడ్డుకు తీసుకుపోయి అందరినీ కాల్చెయ్యమని పెద్ద దొర ఆజ్ఞవేశాడు. క్షణం జాగు సేయకుండా ఉత్తర్వు అమలు జరిగింది. పెద రెక్కలు విరిచికట్టి నది ఒడ్డున కాల్చి చంపిన వారిలో సుప్రసిద్ధ పర్షియన్ విద్వాంసుడు మౌలానా షహబాయి, కాలిగ్రఫీ కళలో కొమ్ములు తిరిగిన సయ్యద్ మొహమ్మద్ మిర్ పంజకస్తి లాంటివారు ఉన్నారు. ఒక్క షహబాయి కుటుంబంలోనే 21 మందిని కాల్చేశారంటే మొత్తం వాడలో ఎంత మందిని పొట్టన పెట్టుకుని ఉంటారో ఊహించవచ్చు.

అలా బ్రిటిష్‌వారి బారిన పడ్డ ప్రముఖుల్లో ఉర్దూ మహాకవి **గాలిబ్** ఒకడు. మిగతా వారితోబాటు ఆయనా అరెన్నయ్యాడు. కాసేపట్లో తుపాకీ గుండుకు గురికావలిసిన వాడే. కాని వెంట్రుక వాసిలో బయటపడ్డాడు. ఆనాడు తన కళ్లముందు జరిగిన ఘోర కలిని గాలిబ్ ఇలా వర్ణించాడు.

"సైన్యం నగరంలోకి వస్తూనే కనపడిన వారినల్లా కాల్చేశారు. ఆస్తులన్నీ దోచుకున్నారు." నా ముందు ఇక్కడ రక్త సముద్రం ఉంది. ఇంకా ఏమి చూడాల్సి వస్తుందో దేవునికెరుక. నా స్నేహితులు వేల మంది మరణించారు. బాధ చెప్పుకుందామన్నా ఎవరూ లేరు. నేను కన్నుమూస్తే కన్నీటి బొట్టు విడవటానికి ఎవరూ లేరు. ఎంత మందిని చంపారో, ఎందరిని ఉరితీశారో దేవుడికే తెలుసు."

'మియా మహమ్మద్ అమీద్ పంజకుష్, మౌల్వీ ఇమాం బక్ష్ నభాయి లాంటి జగద్విఖ్యాత విద్వాంసులను కూడా కచ్చా చలాన్‌లో నివసించే 1400 మందితో బాటు రాజ్‌ఘాట్ గేటు దగ్గరికి తీసుకుపోయి అందరినీ కాల్చేసి, శవాలను యమునా నదిలోకి తోశారు. స్త్రీలయితే పిల్లలతో సహా బావిలో దూకి ప్రాణాలు తీసుకున్నారు. కచ్చా చలాన్‌లోని బావులన్నీ శవాలతో నిండిపోయాయి. నా కలం ఇంతకు మించి

www.thearyasamaj.org

రాయలేదు' అని *Dastan-i-Ghadar* లో **Zahir Delhvi** రాశాడు.

మొత్తం 1600 మంది పౌరులను చంపామని బ్రిటిష్‌వారు చెప్పుకున్నారు. వాస్తవంగా మృతుల సంఖ్య దానికి చాలా రెట్లు ఉంటుంది. ఆ రోజుల్లో తమకు ఢిల్లీ వీధుల్లో ఎక్కడ చూసినా వీనుగుల పోగులు కనిపించేవని, కుళ్లిన శవాలను కుక్కలు, రాబందులు వీక్కుతింటున్న దృశ్యాలు ఎక్కడపడితే అక్కడ దర్శనమిచ్చేవని **లార్డ్ రాబర్ట్స్** తన గ్రంథంలో పేర్కొన్నది అక్షర సత్యం. ఆఖరికి జబ్బుతో మంచానపడ్డ వారిని, గాయపడి చికిత్స పొందుతున్న వారిని కూడా వదలకుండా తెల్ల సైనికులు పిట్టల్లా కాల్చి చంపారు. వారిలో సగం మందికి పైగా నిస్సహాయులైన స్త్రీలే. పిల్లల సంఖ్య కూడా చాలా ఎక్కువే.

తెల్ల సైన్యం విరుచుకుపడ్డ రెండోరోజు (సెప్టెంబరు 21న) ఢిల్లీ నగరం **గ్రిఫిత్స్**కి ఇలా కనపడింది:

"వీధులు నిర్మానుష్యంగా, నిశ్శబ్దంగా ఉన్నాయి. ఏదో మహాప్రళయానికి గురిఅయిన మృత నగరంలా తోచింది. కొద్ది రోజుల కింది వరకూ అక్కడ వేల జనం నివసించే వారంటే నమ్మటం కష్టం. ఎక్కడ చూసినా సిపాయిలూ, సామాన్య పౌరుల మృతదేహాలు కుప్పలుగా కనిపించాయి."

[G.J. Griffiths, *Siege of Delhi*, P.199]

ఢిల్లీ ఏజన్సీ పరిధిలో ఏడు సంస్థానాలున్నాయి. వాటిలో జాజ్జర్ సంస్థానం నవాబు కష్టకాలంలో సర్ థియోఫలస్ మెట్‌కాఫ్ దొరవారికి ఆశ్రయం ఇవ్వలేదట. పైగా బహదూర్‌షాకు ఉత్తరాలు రాసేవాడట. అలాగే మిన్టర్ మండెరో అనే జడ్జిగారిని తిరుగుబాటుదార్లు చంపుతూంటే బుల్‌బగడ్ రాజా రక్షించలేదట. ఫరుక్‌నగర్ నవాబుకూ బహదూర్‌షాతో సంబంధం ఉన్నట్టు దొరలకు అనుమానం తోచిందట. ఇంకేం ? తెల్ల సైనికులు హుటాహుటిన వెళ్లి ముగ్గురు 'ద్రోహులనూ' బంధించి కోటలో చీకటి కొట్లో వేశారు. వారికి బతికే హక్కు లేదని, తక్షణం ఉరితీయాల్సిందేనని మిలిటరీ కోర్టు తక్షణ న్యాయం చెప్పింది. వెంటనే సిటీ గేట్లు మూసేశారు. గుర్రాల దండు వాళ్లు కోటకు పరుగెత్తి ముగ్గురు ప్రభువులనూ కట్టేసి గుర్రబ్బండి ఎక్కించి ఊరేగింపుగా తీసుకెళ్లారు. మిలిటరీ బ్యాండు వచ్చి ఆనందంగా మేళతాళాలూ మోగిస్తుండగా ముగ్గురినీ ఉరితీశారు.

బ్రిటిష్ ఉరికంబానికి ప్రభువులు, ప్రజలు అన్న తారతమ్యం లేదు. ఉసురు తీయడానికి పెద్ద కారణం కూడా దానికి అక్కర్లేదు. నగర పాలనకు మిలిటరీ గవర్నరు లాగే నేరాల విచారణకు మిలిటరీ కమిషనును ఏర్పరిచారు. ప్రాణాలు తియ్యటానికి దానికి సర్వాధికారాలు ఇచ్చారు. కమిషను సభ్యులెవరూ దయతలిచే మూడ్‌లో లేరు. అభియోగం వచ్చిందే తడవుగా నేరం నిర్ధారించేవారు. నేర నిర్ధారణ అయిందే తడవుగా ఉరిశిక్ష వేసేవారు. బహదూర్‌షాకు బంధువులు ఐతే చాలు; అతడి కొలువులో పనిచేసినా సరే; తిరుగుబాటులో పాల్గొన్నట్టు లేశమంత అనుమానం కలిగిందా ఉరితాడు మెడలో పడిందన్నమాటే. తిరుగుబాటులో ఎలాంటి ప్రమేయం లేనివాళ్లను కూడా అమానుషంగా ఉరికంబం ఎక్కించారు. ఒడ్డూ పొడుగూ ఉండి కాస్త నదరుగా కనిపిస్తే చాలు వాడు తిరగబడ్డ సైనికుడే కావొచ్చని నందేహించి, ఎందుకైనా మంచిదని ఉరితీసేవారు. తిరుగుబాటుదారులు మెట్‌కాఫ్ దొర వెంటపడి తరుముతూంటే అడ్డం రాలేదన్న నెపంతో అజ్మీరీ గేటు దగ్గర చెప్పులు కుట్టేవాళ్లను ఉరి తీయటం దొరల మార్కు న్యాయానికి మచ్చుతునక. ఇదిగాక బ్రిటిష్ వారికి ఉప్పందించే తొత్తులు తమకు గిట్టని వారిపై కక్ష తీర్చుకునేందుకు 'తిరుగుబాటు' ముద్రవేసి నిరపరాధులను చంపించిన ఘటనలు కొల్లలు. ఊరొదిలి పారిపోయిన వారిని కూడా గాలించి, పట్టివేసి, వట్టి పుణ్యానికి ఉరితాడు తగిలించిన కేసులకు లెక్కలేదు. ఢిల్లీ దాకా తీసుకువచ్చేందుకు ఓపిక లేకపోతే పట్టుకున్న చోటే ఏ చెట్టుకొమ్మకో ఉరితీసి చేతులు దులుపుకునేవారు. ఆ కాలంలో ఎంత దూరం పోయినా బాటకు ఇరువైపులా వందలాది మృతదేహాలు చెట్లకు వేలాడుతూ కనిపించేవి.

చాందిని చౌక్ పోలీసు స్టేషను ఎదుట అప్పట్లో ఒక చెరువు ఉండేది. దానికి మూడువైపులా ఉరికంబాలను పెట్టి రోజూ ఎంతోమందిని లెక్కా పత్రం లేకుండా హతమార్చారు. చంపడమే ఘాతుకమైతే చంపేందుకు అనుసరించిన పద్ధతి ఇంకా హేయమైనది. ఉరికంబాల ఎదుట ముద్దాయిలను లైనులో నిలబెట్టేవారు. ఒక బ్యాచివారు గిలగిలలాడుతూ కాళ్లూ చేతులూ కొట్టుకొంటూ బలవన్మరణం పాలవుతూంటే మిగతా వారు చూస్తూ మరికాసేపట్ల తమకూ పట్టబోయే గతిని తలచుకుంటూ భయంతో గజగజ వణికేవారు. గుండెలవిసి వారు చేసే ఆక్రందనలను తెల్లవారు ఆనందంగా ఆలకించేవారు. ఒక్కోసారి స్పెషల్ ఎఫెక్టు కోసం ఖైదీల ముసలి తల్లులను పట్టుకొచ్చి ఉరికంబం ముందు కూచోబెట్టేవారు. బిడ్డల చావు కళ్ల చూడలేక వాళ్లు గుండెలు పగిలేలా ఆక్రోశిస్తూంటే పగలబడి నవ్వేవారు.

నగరం నడిబొడ్డున ఉరికంబాలు నెలకొల్పిన ప్రాంతంలో ఓ దుకాణం ఉండేది. ఉత్సాహవంతుడైన దుకాణదారు ఉరితీతలను సుఖంగా తిలకించటానికి వీలుగా పందిరి వేయించి, కుర్చీలు అమర్చి, వాటిని అద్దెకిచ్చేవాడు. ఇంగ్లీషు దొరబాబులు వాటిలో చేరగిలి నరదాగా సిగార్లు వెలిగించి పొగవదులుతూ సాటి మానవుల చావుకేకలను కర్ణపేయంగా ఆలకించేవారు. వారికి తోడుగా దొరసానులూ వచ్చి కూచునేవాళ్లు. చావుల దృశ్యాలు చూడలేని దొరసానమ్మలు ముఖానికి హాట్ అడ్డువేసుకుని కళ్లు మూసి శబ్దాలు మాత్రం వింటుండేవాళ్లు.

ఢిల్లీ నగరాన్ని మూడురోజులపాటు యథేచ్ఛగా లూటీ చేయడానికి కుంపిణీ సర్కారు వారు తమ సైనికులకు ఉదారంగా అనుమతించారు. వచ్చిన అవకాశాన్ని వారు పూర్తిగా వాడుకుని బోలెడు లాభపడ్డారు. గురుతేజ్ బహదూర్ దారుణ హత్యకు ప్రతీకారంగా ఖాల్సా ఒకనాడు ఢిల్లీని నాశనం చేస్తుందన్న జోస్యాన్ని సిక్కు సైనికులకు వనిగట్టుకుని గుర్తుచేశారు. లూటీలకు, ఖూనీలకు మతావేశపు ముసుగు దొరకటంతో వాళ్లు ఇంకా రెచ్చిపోయి సామాన్య ముస్లిం ప్రజానీకంపై రాక్షసంగా విరుచుకుపడ్డారు. వారికి గూర్ఖాలు తోడు. దొంగతనాలు, దోపిడులు కుల వృత్తి అయిన కుటుంబాల నుంచి వచ్చిన సిపాయిలూ కంపెనీ కొలువులో ఎందరో ఉన్నారు. వారు ఇల్లు చూస్తే సొమ్ము ఎక్కడ దాచిందీ ఇట్టే చెప్పగలరు. గోడను తడిమి రహస్య నిధుల జాడలు తీయగలరు. నేలమాళిగలోనో, రహస్య అరల్లోనో విలువైన

www.thearyasamaj.org

నగానట్రా దాచినట్టు అనుమానం తోచగానే గడ్డ పలుగుతో అక్కడ తవ్వి అందిందంతా దోచుకునేవాళ్లు. ఇలా సైనికులు ఇళ్ల మీద పడి సర్వస్వం కొల్లగొట్టారు. గుప్త నిధులు దొరుకుతాయేమోనని గదుల గచ్చులు, గోడలు తవ్వితోశారు. సోమనాథ్‌ను కొల్లగొట్టిన గజనీ మహమ్మద్ ఘనతను గుర్తుచేసుకుని హిందూ దేవాలయాల విగ్రహాలను పెకలించి, గర్భగుడులు తవ్వి కంటపడ్డ విలువైన వస్తువునల్లా దోచుకున్నారు. మూడు రోజుల లూటీలో సేకరించిన వస్తు సామగ్రిని వేలం వేసి వచ్చిన సొమ్మును సైనికులకు పంచి పెట్టటానికి 'ప్రైజ్ ఏజన్సీ'ని దొరతనమే దయతో ఏర్పరచినిది. అయినా దానిదాకా పోకుండా సైనికులు నొక్కేసినదే చాలా ఎక్కువ.

ఇళ్లు కూల్చి, ఆస్తులు దోచి, జనాన్ని వీక్కుతినటంతో నవ నాగరిక దొరల సుకుమార హృదయాలు శాంతించలేదు. మొత్తం నగరాన్ని ధ్వంసం చేసి జనావాసానికి పనికిరాకుండా పాడుపెట్టాలని ఒక దశలో ఆలోచించారు. జామా మసీదును చర్చిగా మార్చి, వీరమరణం చెందిన బ్రిటిష్ సైనికుల పేర్లు దాని గోడలపై చెక్కించి ఇంగ్లషు వారి దిగ్విజయానికి శాశ్వత చిహ్నంగా ప్రపంచానికి చూపించాలని కూడా బర్న్ దొర తలపెట్టాడు. సర్ లారెన్స్ ఒప్పుకోకపోవటంతో అదృష్టవశాత్తూ మసీదుకు ముప్పు తప్పింది.

"After the seige was over, the outrages committed by our army are simply heartrending. A wholesale vengeance is being taken without distinction of friend or foe. As regards the looting, we have indeed surpassed Nadir Shah!" (ముట్టడి అనంతరం మన సైన్యం చేస్తున్న అఘాయిత్యాలు హృదయ విదారక మైనవి. మిత్రుడా, శత్రువా అన్న తేడా లేకుండా మూకుమ్మడిన ప్రతీకారం తీర్చుకుంటున్నారు. లూటీల విషయంలో మనం నాదిర్షాని మించిపోయాం) అని బెంగాల్ గవర్నర్ లార్డ్ ఎల్‌ఫిన్‌స్టోన్ పంజాబు కమిషనర్ సర్ లారెన్స్‌కు రాసిన జాబు, రెణ్నెల్లు నిరాఘాటంగా సాగిన సైనిక దురాగతాలకు తిరుగులేని రుజువు.

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन में पधारने वाले प्रतिनिधियों की सेवा में

दिल्ली और उत्तर भारत तथा अन्य प्रांतों से हैदराबाद सम्मलेन में पधारने वाले महानुभावों से निवेदन है कि नई दिल्ली रैल्वे स्टेशन से

1) 31 जनवरी, 2017 के दिन तेलंगाना एक्सप्रेस, सायंकाल 5.25 पर निकलती है जो दूसरे दिन 7.25 बजे तक हैदराबाद पहुँचती है । हैदराबाद स्टेशन पर उतरना है । वहाँ से आर्य समाज बड़ी चौड़ी सुल्तान बाजार 2 किलोमीटर दूर है । समाज के नजदीक आवास की व्यवस्था की गई है ।

2) 1 फरवरी, 2017 के दिन प्रातः 7.00 पर हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से आन्ध्र प्रदेश सम्पर्क क्रांति एक्सप्रेस निकल कर 2 फरवरी, 2017 को प्रातः 9.50 पर कांचीगुड़ा रेलवे स्टेशन (हैदराबाद) पहुँचती है । इससे आने वाले यात्री काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन पर ही उतरें । आधा फर्लांग की दूरी पर ही विशेष लोगों की आवास की व्यवस्था है । अन्य के लिए आर्य समाज के आस-पास आवास की व्यवस्था की गई है । काचिगुड़ा रेलवे स्टेशन आर्य समाज से एक किलोमीटर दूर पर है ।

ऊपर की ट्रेनें सुविधाजनक रहेंगी । अन्य ट्रेनों में बंगलौर, सुविधा और कोंगू एक्सप्रेस है । मेरा नम्बर है - 09849560691 और ईमेल का पता निम्न लिखित है । Email : acharyavithal@gmail.com, aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com

3) सम्मेलन का स्थान : वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल, उमानगर, कुन्दनबाग, बेगमपेट, हैदराबाद है । यह स्थान मुख्यमंत्री आवास के नज़दीक है । जो व्यक्ति सीधे समारोह स्थल पहुँचना चाहेंगे वे बेगमपेट रैलवे स्टेशन पर उतर सकते है ।

4) आवास का स्थान : नरेन्द्र भवन (राजमोहल्ला, काचीगुड़ा क्रास रोड़), तथा नरेन्द्र भवन के आसपास ही अन्य भवनों तथा होटल्स (Lodge) में आवास की व्यवस्था की गई है । आवास और समारोह स्थल में १० किलोमीटर का फासला है । आवास स्थान से समारोह स्थल जाने के लिए प्रतिदिन निश्चित समयानुसार बसों का इंतेजाम किया गया है । आगंतुक महानुभाव ऊपर लिखित सूचनाओं पर विशेष रूप से ध्यान दे ।

- प्रो. विठ्ठलराव आर्य मंत्री सार्वदेशिक सभा

www.thearyasamaj.org

स्मरण प्रभात कुमार रॉय

पर्यावरण रक्षा की सीख

महाकवि भवानी प्रसाद मिश्र के पुत्र अनुपम मिश्र ने पर्यावरण संरक्षण ऋषि के रूप में भारत की धरा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी और गाँधीवादी भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का वह स्वयं एक जीवंत उदाहरण बनकर जिए। वर्धा में जन्मे अनुपम मिश्र के जीवनकाल के प्रत्येक कार्य, वाणी और लेखन में भारतीय ऋषि परंपरा के मंत्र साकार होते दिखाई देते थे। ६९ वर्ष की आयु में तकरीबन एक वर्ष लंबी अस्वस्थता के पश्चात् पर्यावरण की भारतीय चिन्तन परम्परा के सशक्त हस्ताक्षर और प्रख्यात पुरोधा अनुपम मिश्र अखिरकार इस नश्वर संसार को सदैव के लिए छोड़ कर चले गए। अनुपम मिश्र मेरी पहली मुलाकात वर्ष १९६८ में समाजवादी युवजन सभा की एक बड़ी बैठक में भोपाल में हुई थी। विद्यार्थी जीवन काल में अनुपम मिश्र मध्यप्रदेश के एक प्रखर और प्रबल लोहियावादि छात्र नेता रहे थे। डॉ. राममनोहर लोहिया की मृत्यु के पश्चात अनुमप मिश्र की निकटता लोकनायक जयप्रकाश नारायण के साथ बढ़ी। जयप्रकाश नारायण के प्रमुख अनुयाई के तौर पर चम्बल घाटियों में माधो सिंह और मोहर सिंह के डाकू गिरोहों का आत्म समर्पण कराने में अनुपम मिश्र ने विशिष्ठ भूमिका निभाई थी। राष्ट्रव्यापी जे.पी. आँदोलन में सक्रीय भागीदारी अंजाम दी और आपातकाल में १९ महिने की जेल यात्रा की। जयप्रकाश नारायण के सानिध्य में गाँधी शांति प्रतिष्ठान से सबन्ध हुए और फिर जीवन पर्यन्त इस प्रतिष्ठान से जुडे रहे। पर्यावरण की हिफाजत करने में अग्रणि चीपको आंदोलन और उसके लीडर चण्डीप्रसाद भट्ट को अनुमप मिश्र का सदैव सक्रीय समर्थन प्राप्त रहें और नौजवान अनुपम स्वयं एक पेड़ से कई दिनों तक चिपका रहा था। टिहरी बांध विरोधि आंदोलन वह प्रबल समर्थक बनकर देश के पटल पर उभरे। मेघा पाटेकर के नर्मदा बचाव आंदोलन के प्रमुख मार्गदर्शक तौर पर सक्रीय रहें। आज़ादी दौर में देश भर में पर्यावरण की हिफाजत के लिए संचालित प्रायः सभी आंदोलनों और मुहिमों में अनुपम मिश्र का सक्रीय किरदार और कारकर्दगी बनी रही। राजस्थान के सरजमीं पर बिकानेर और जेसलमेर सरीखे मरुस्थली इलाकों में प्रायः विलुक्त हो चुके परमपरागत जलसंचवन के भारतीय तौर तरीको और संरचनाओं को अनुपम मिश्रा ने फिर से पुनर्जीवित कर दिखाया था। जल पुरुष राजेन्द्र मिश्र और उनके संगठन तरुण भारत संघ ने अनुपम मिश्रा के नक्ष-ए-कदम पर चलकर राजस्थान के कुछ अन्य मरुस्थल क्षेत्रों में कमाल का जल-संरक्षण कर दिखाया है। तरुण भारत संघ के तो तकरीबन ३० वर्षों तक अनुपम मिश्र अध्यक्ष भी रहे थे। बुंदेलखण्ड में सूखे की जबरदस्त मार झेल रहे ग्रामीण वासियों को विलुक्त हुए तालाबों का बडा ही अनुखा महत्व समझा गए अनुपम मिश्र। आज भी खरे है तालाब सरीखी कालजयी पर्यावरण संरक्षण पुस्तक के रचयता अनुपम मिश्र ने जो कुछ भी कहा और लिखा वस्तुतः उसे ही जीकर दिखा दिया था। अनुपम मिश्र की किताव ''आज भी खरे है तालाब'' हिन्दी भाषा की पुस्तकों की विक्री का इतिहास रच चुकी है और जिसकी तकरीबन १० लाख प्रतीयाँ अभी तक बिक चुकी है। देश-विदेश की ५० से अधिक भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद किया जा चुका है। अनुपम मिश्र ने ''आज भी खरे है तालाब'' की रॉयल्टी का एक पैसा भी अपने खाते में कदाचित नहीं रखा और सब कुछ गाँधी शांति प्रतिष्ठान को समर्पित कर दिया था। अनुपम मिश्र की एक अन्य प्रख्यात पुस्तक की रचना की थी ''राजस्थान की रजत बूंदे''।

पत्रकार प्रभाष जोशी ने कभी अनुपम मिश्र के विषय में लिखा था कि अनुपम मिश्र एक एकदम सच्चे-सरल और बेहद् विनम्र, सदैव प्रसन्नचित्त रहने वाले व्यक्ति है। यहाँ तक की यह एक खिलखिलाते हुए और अपनी रगरग में इन्सानियत से सराबोर व्यक्तित्व के शख्स है। आज के दौर में बिना कोई मोबाईल लिए और कोई अपना प्राईवेट वाहन लिए बस एक झोले में दो जोड़ी कुर्ते पाजामें के साथ लिए हुए गाँधीपथ का एक विलक्षण पथिक जीवन पर्यन्त भारत के कोने-कोने में पर्यावरण का संरक्षण करने का अमर संदेश देता हुआ आखिरकार चिर निद्रा में सो गया। एक पल जिसकी गती रुकती न थी, किस कदर के मौत के हाथों मजबूर होकर सो गया। अनुपम मिश्र ने अपने चरित्र, व्यक्तित्व, कार्यों और पुस्तकों के द्वारा अपने पीछे एक अत्यंत सशक्त और शानदार विरासत छोड गए है। अनुपम मिश्र को आज के दौर का पर्यावरण संरक्षण ऋषि कहकर संबोधित किया जाए तो कदापि अतिश्योक्ति नहीं होगी। दुनिया भर में इंसान भोगवादी और भौतिकवादी विकास की अंधी दौड़ में धरती के पर्यावरण को बर्बाद करने पर उतारु हो रहा है। भोगवादी और पूंजवादी संस्कृती ने विश्व में जंगलों का सर्वनाश कर देने का बीड़ा उठा लिया है। ग्लोबल वार्मिंग ने धरापर अपनी दस्तक दे दी है। बड़े-बड़े विशाल ग्लेशियर तेजी के साथ पिघलकर धरती पर विनाश लीला रच रहें हैं। वातावरण में व्याप्त विनाश कारी धुआं और धुंध बड़े भारतीय शहरों की तो जैसे नियती बन चुका है। ऐसे विकासशील दौर में जिस में विनाश लीला लक्षण प्रकट हो रहे ऐसे विकट दौर में अनुपम मिश्र सरीखे पर्यावरण संरक्षण पूरोधा के पैगाम को जिंदा रखने और उसका प्रचार-प्रसार करने की बहुत अधिक अवश्यकता है।

प्रभात कुमार रॉय

आमंत्रण-पत्र

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

दिनांक : 2, 3 व 4 फरवरी, 2017

स्थान : हैदराबाद (तेलंगाना)

आपकी सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार-विमर्श करने तथा भावी दिशा निर्धारित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना के सौजन्य से आगामी 2 से 4 फरवरी, 2017 तक तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में राष्ट्रीय स्तर का आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

यह सम्मेलन आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित किया जा रहा है क्योंकि आर्य समाज तथा उससे बाहर के समस्त प्रबुद्धजन यह अनुभव कर रहे हैं कि आर्य समाज सक्रिय, तेजस्वी और प्रभावशाली कैसे बने? वर्तमान में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु आर्य समाज की दिशा व दृष्टिकोण क्या हो? आर्य समाज के छठे नियम में निर्दिष्ट मुख्य उद्देश्य के क्रियान्वयन की क्या योजना बने? इस तरह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व ज्वलन्त विषयों पर चिन्तन करने हेतु यह सम्मेलन अति आवश्यक व सामयिक है।

सम्मेलन में विचारणीय विषय अधोलिखित हैं। इन विषयों पर आप अपने गहन विचारों को संक्षेप में लिखित रूप में अवश्य भेज दें या साथ लेते आवें।

1. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान एवं उपायों के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या हो? वर्तमान में आर्य समाज आम जनता के जीवन को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विषयों पर क्या कार्यशैली अपनाये ताकि आम जनता के साथ आर्य समाज सीधा जुड़ सके।
2. वर्तमान के समस्त प्रचार माध्यमों यथा प्रिन्ट मीडिया (अखबार व पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रानिक मीडिया (टी.वी., रोडियो आदि) के द्वारा वेद, दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की योजना क्या हो?
3. सिद्धान्तों के गहन विषयों पर विशेष शोध एवं शंका समाधान हेतु विद्वत समिति की रूपरेखा।
4. वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म कैसे बने विषय पर विशेष चर्चा।
5. आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव, साप्ताहिक सत्संग व अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में उपस्थिति के सम्बन्ध में प्रभावशाली योजना क्या हो?
6. आर्यों में तथा सामान्य जनता में आध्यात्मिक प्रवृत्ति को बढ़ाने की योजना क्या बने?
7. बालक, बालिकाओं व युवक-युवतियों को संस्कारित करने तथा आर्य समाज में दीक्षित करने हेतु चरित्र निर्माण शिविरों, वाद-विवाद, भाषण, लेखन आदि प्रतियोगिताओं की योजना एवं अन्य कार्यक्रम क्या हों?
8. गुरुकुलों के स्नातकों एवं आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं आर्य समाज के कार्यों में उपयोग की योजना।
9. आर्य समाज की स्थानीय इकाई को जन सामान्य के लिए उपयोगी बनाने तथा इसके माध्यम से ऐसे जनसेवा के कार्य करने जिनसे सामान्य जनता आर्य समाज से जुड़े आदि की योजना।

सम्मेलन में आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, वरिष्ठ उपदेशकों, गुरुकुलों के वरिष्ठ आचार्यों, वरिष्ठ आर्य भजनोपदेशकों, वरिष्ठ आर्य बुद्धिजीवियों तथा वरिष्ठ आर्य नेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है। आप आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तित्व हैं। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप इसमें अवश्य पधारकर अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं लिखित सुझाव व विचारों से सम्मेलन की सफलता में अपना योगदान प्रदान करें। आशा है आप अपनी स्वीकृति से अवगत कराकर कृतार्थ करेंगे।

निवेदक

(प्रो. विट्ठल राव आर्य)
सभा मंत्री
प्रधान, आ.प्र.सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना
मो.:-09849560691

(आचार्य सोमदेव शास्त्री-मुम्बई)
संयोजक
मो.:-09869668130

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान
मो.:-9013783101

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना के सौजन्य से

हैदराबाद में

राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन

दि. 2 फरवरी 4 फरवरी 2017 तक

सम्मेलन में आर्य जगत से सम्बंधित महात्मा, साधु-संत, वैदिक विद्वान, प्रोफेसर्स, बुद्धिजीवी, पुरोहित एवं भजनोपदेशक तथा आर्य समाज के प्रमुख नेता आदि पधार रहें हैं। सम्मलेन में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु आर्य समाज के दृष्टिकोण व कार्यनीति पर, विशेषकर सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक विषयों पर कार्यनीति को तैयार कर दिशा-निर्देश दिया जाएगा ताकि आर्य समाज सशक्त रूप से जनता के बीच उभर सके तथा समाज और देश का नेतृत्व कर सके। अतः समस्त आर्य बंधुओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर सम्मेलन को सफल बनाएं।

भवदीय

स्वामी आर्यवेश
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

पं. सोमदेव शास्त्री
मुंबई
संयोजक

प्रो. विठ्ठल राव आर्य
महामंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना

हरिकिशन वेदालंकार
मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना

www.thearyasamaj.org

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-01-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प हिन्दी-तेलुगु द्विभाषा पक्ष पत्रिका
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

दान की अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के सौजन्य से

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-नई दिल्ली के तत्वावधान में

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महा सम्मेलन

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महा सम्मेलन का आयोजन दिनांक 2, 3, 4 फरवरी 2017 को, वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल, बेगमपेट-हैदराबाद में किया जा जा रहा है। तैयारियाँ तीव्रगति से जारी हैं। सम्मेलन की सफ़लता के लिये सभी आर्य बन्धुओं से आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है। कृपया नगद दान राशी अथवा चेक या डी.डी. के द्वारा "**आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.**" के नाम सभा कार्यालय में जमा करवाने का कष्ट करें या on line "**आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.**" के नाम Bank of India Branch :Kachiguda जमा कर सकते हैं। आन लाइन (On line) पर -

Bank of India (BOI) काचीगुडा ब्रांच हैदराबाद A/c. No. 860610210000006 में भी जमा कर सकते हैं। इस बैंक का IFSC Code No. BKID0008606 है।

भवदीय

प्रधान कोषाध्यक्ष मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.
फोन नं : (1) 040-24756983, (2) 040-66758707, मोबाइल : 9849560691

ఆర్థిక సహాయార్థం విజ్ఞప్తి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర.-తెలంగాణ సౌజన్యంతో
సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ ఆధ్వర్యమున

జాతీయ ఆర్య విద్వత్ మహా సమ్మేళనం

జాతీయ ఆర్య విద్వత్ మహా సమ్మేళనం 2,3,4 ఫిబ్రవరి 2017 రోజులలో వైదిక ఆశ్రమం కన్యాగురుకులం, బేగంపేట, హైదరాబాదులో వైభవోపేతంగా నిర్వహింపబడుచున్నది. ఏర్పాట్లు తీవ్రగతిన కొనసాగుతున్నాయి. సమ్మేళనం విజయవంతంగా జరుగుటకు ఇతోధికంగా ఆర్థిక (ధన) సహాయం అత్యంత అవసరం. కావున ఆర్య బంధువులంతా దాన రూపమున తమ ఆర్థిక సహకారాన్ని అందించాలని కోరుచున్నాము. దయతో మీరు చెల్లించే విరాళాలను "ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర." పేరున నగదు లేదా చెక్కు లేదా డిమాండ్ డ్రాఫ్టు (D.D.) ద్వారా సభాకార్యాలయంలో జమచేయగలరు. విరాళాలను ఆన్‌లైన్ (On line) ద్వారా కూడా దిగువ అకౌంట్ నంబర్ గల ఖాతాలో కూడా వేయవచ్చును. (BOI) Bank of India, Kachiguda, Hyderabad A/c. No. 860610210000006, IFSC Code No. BKID0008606 కై।

భవదీయులు

అధ్యక్షులు కోశాధ్యక్షులు కార్యదర్శి

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com, acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, 66758707
సంపాదక: శ్రీ విఠలరావ ఆర్య ప్రధాన సభా ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.